ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः
राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

नवम्बर 2025

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

पूज्यपाद स्व. स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी'

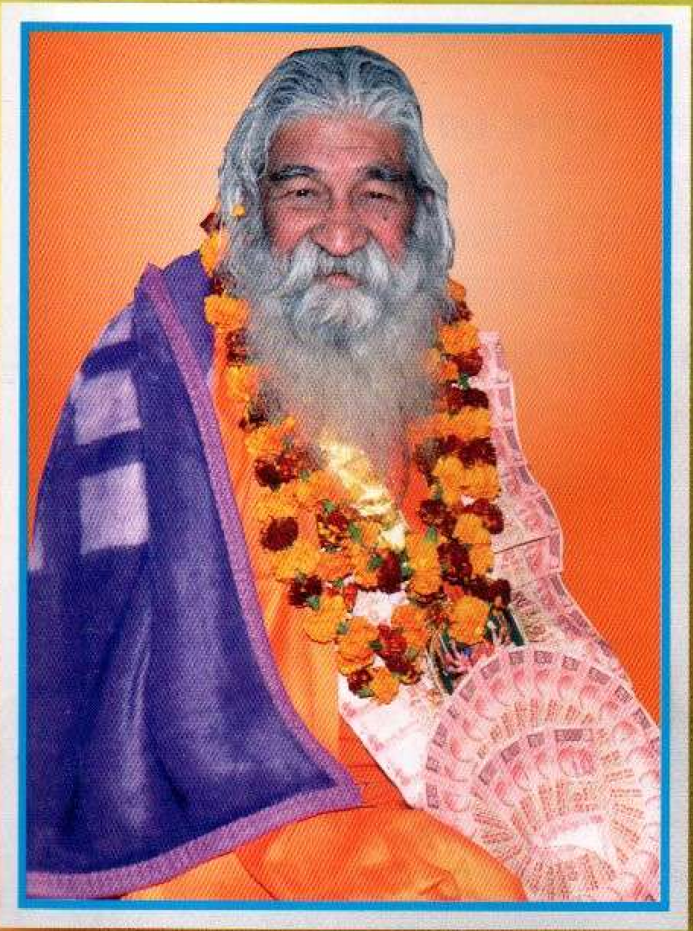

के 90वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

बृहद् यज्ञ एवं भजन संध्या
सुर और संगीत
का भव्य आयोजन

गुरुवार 20 नवम्बर 2025

(विवरण कवर पृष्ठ 2 पर)

आर्य समाज के
संस्थापक,
वेदों के उद्धारक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

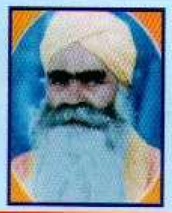

आत्मशुद्धि आश्रम
संस्थापक कर्मयोगी
पूज्य श्री आत्मस्वामी
जी महाराज

महर्षि दयानन्द
सरस्वती

ओ३म्

निंमत्रण...

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबल रक्षक वेद, यज्ञ, योग साधना केन्द्र

आत्मशुद्धि आश्रम के भूतपूर्व मुख्याधिष्ठाता

आत्म स्वामी जी
महाराज

पूज्यपाद स्व. स्वामी धर्ममुनि जी महाराज 'दुग्धाहारी' के

90वें जन्मदिवस के शुभावसर पर

बृहद् यज्ञ एवं भजन संध्या सुर और संगीत का भव्य आयोजन

गुरुवार 20 नवम्बर 2025

सानिध्यः आचार्य विक्रमदेव जी नैष्ठिक मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम

यज्ञ ब्रह्माः श्री आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर हरियाणा

कार्यक्रम मध्याह्नोपरान्त 2:30 बजे से 7:00 बजे तक तत्पश्चात् ऋषिभोज

वक्ता एवं गायक कलाकार– श्री स्वामी रामानन्द जी सरस्तवी, श्री शिव स्वामी जी, संगीताचार्य श्री भगवान दास जी महाराज (वेदान्त आश्रम, बहादुरगढ़), डॉ. रवि शास्त्री जी, पं. जयभगवान जी आर्य (झज्जर) एवं आश्रम के ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम प्रभावशाली रहेगा।

आश्रम पुराने बस स्टॉप के समीप मैट्रो पिलर न. 819, दिल्ली रोड पर स्थित है।

संयोजकः श्री राजवीर आर्य, मो. 9811778655

निवेदकः श्री सत्यानन्द आर्य (संरक्षक) श्री कन्हैया लाल आर्य (प्रधान) मो. 9911197073 श्री सत्यपाल वत्सार्य (उपप्रधान) मो. 9416055359 श्री अशोक जून आर्य (कोषाध्यक्ष) मो. 9996542766 अमृत आर्य (सहयोगी) मो. 9990108323

आत्मशुद्धि आश्रम, (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़ जिला-झज्जर, (हरियाणा), चलभाषः 9416054195, 9896578062, 7988671343

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

कार्तिक-मार्गशीर्ष सम्वत् 2082 नवम्बर 2025

सृष्टि सं. 1960853126 दयानन्दाब्द 200

वर्ष-24) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री स्वामी धर्ममुनि दुग्धाहारी जी

(वर्ष 55 अंक 11)

सम्पादकः आचार्य विक्रम देव
(मो. 9896578062, 7988671343)

❖

प्रधान सम्पादकः
श्री राजवीर छिक्कारा (मो. 9811778655)

❖

सह सम्पादकः डॉ. रवि शास्त्री

❖

परामर्श दाताः सत्यानन्द आर्य,
कन्हैयालाल आर्य, सत्यपाल वत्सार्य

❖

व्यवस्थापकः
आचार्य अमृत आर्य

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़
जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507
चलभाष: 9416054195
E-mail : atamsudhi@gmail.com

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार खण्ड	4
विश्व का एकमात्र राजा	6
क्या मृत्यु का काल निश्चित है?	7
एक सोच/जीवनः दो दृष्टि (कविता)	9
प्राण में भेद	10
सृष्टिकर्ता ईश्वर की न्याय-व्यवस्था से मिलते हैं...	13
अथर्ववेद में नारी की गरिमामयी स्थिति	16
सात दिवसीय आश्रम स्थापना दिवस कार्यक्रम	17
मानव जीवन एवं परिवार का वास्तविक मूल्य	23
आयुर्वैदिक औषधि हरड़ के चमत्कारी लाभ	24
श्री धृतराष्ट्र को विदुर जी का उपदेश	26
मंगला-मंगली चक्कर-यानि निर्दोषों पर दोषारोपण	29
धर्म पर बलिदान होने वाले आर्यवीर हकीकत राय	31
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की पुण्य स्मृति में एवं आर्य समाज स्थापना के सार्द्ध (150वां) शताब्दी समारोह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न

महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज स्थापना के सार्द्ध (150वां) शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में 10 से 12 अक्टूबर तक महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में तीन दिवसीय 142वां भव्य ऋषि मेला पुष्कर रोड स्थित श्री ऋषि उद्यान में आयोजित हुआ। इस समारोह में श्री स्वामी विदेह योगी, श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री आचार्य विरजानन्द दैवकराणी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. वेद पाल, डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी, डॉ. ज्वलन्त शास्त्री, डॉ. राम प्रकाश वर्णी, डॉ. नरेश धीमान, आचार्य विजय पाल, डॉ. जगदेव, आचार्य धनञ्जय, आचार्या सूर्यादेवी, आचार्या प्रीति विमर्शिनि, श्री ठाकुर विक्रम सिंह, श्री देशबुन्धु आर्य, आचार्य जीव वर्धन शास्त्री तथा भजनोपदेशक श्री विवेक पथिक उपस्थित रहे। इस दौरान महर्षि दयानन्द के विचारों व सिद्धान्त को प्रचारित करते हुए अथर्ववेद पारायण यज्ञ (जिस के ब्रह्मा आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी रहे), वेद प्रवचन, वेद संगोष्ठी, भजनोपदेशक, योग सभा, वानप्रस्थ दीक्षा, सम्मान समारोह, वैदिक विषयों पर विभिन्न सत्र, आर्यवीर दल के भव्य व्यायाम प्रदर्शन के साथ अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। इस आयोजन के विशेष आकर्षण ये रहे:- अथर्ववेद पारायण यज्ञ 6 अक्टूबर 2025 को प्रारम्भ, 12 अक्टूबर 2025 को पूर्णाहुति, वानप्रस्थ दीक्षा-ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रदर्शन वेद कण्ठस्थीकरण की परीक्षा, ऋषि दयानन्द के जीवन पर विशेष गोष्ठियां, नाटिकायें, आर्य साहित्य एवं यज्ञादि उपकरणों का विक्रय, कार्यकर्त्ताओं तथा विद्वानों का सम्मान।

विशेष सम्मेलनों का आयोजन-1. कृण्वन्तो विश्वमार्यम, 2. आज के .... रक्षा के उपाय, 3. परमात्मा और विज्ञान की कसौटी पर, 4. वैदिक दर्शनों और उपनिषदों का सन्देश, 5. आर्य समाज और युवा जगत् कितना दूर, कितना निकट, 6. भारतीय संविधान-कितना भारतीय, कितना अभारतीय, 7. आज की परिस्थिति में आर्य समाज की भूमिका, 8. महर्षि दयानन्द की विश्व को देन, 9. परोपकारिणी सभा का आर्य समाज की प्रगति में योगदान।

सम्मान, पुरस्कार एवं छात्रवृत्ति-1. डॉ. प्रियव्रत दास वेद वेदांग पुरस्कार, श्री स्वामी व्रतानन्द गुरुकुल आमसेना ओडिशा, 2. अभयदान ट्रस्ट देहली विद्वन्त पुरस्कार डॉ. भीम सिंह कुरुक्षेत्र, 3. डॉ. मुमुक्षु आर्य आर्ष पाठ विधि पुरस्कार-श्री शिवकुमार शास्त्री-गुरुकुल तातारपुर, 4. श्री स्वामी आशुतोष आर्ष अध्यापक पुरस्कार-श्री स्वामी ब्रह्मानन्द हैदराबाद, 5. श्रीमती जमनादेवी राम चन्द्र आर्य विद्वत्त पुरस्कार-देहली विश्व विद्यालय के प्राध्यापक डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, 7. श्रीमती कमला देवी नवाल धर्मपत्नी श्री मथुरा प्रसाद नवाल विदूषी सम्मान-आचार्य सुखदा जी वाराणसी, 8. श्री मथुरा प्रसाद नवाल आर्य विद्वत्त पुरस्कार-केरल से डॉ. आनन्द राज, 9. दीप चन्द्र आर्य धर्मार्थ न्यास पुरस्कार- आचार्य जयकुमार गुरुकुल मंझावली (फरीदाबाद), 9. श्री रघुवर सिंह सुधारक वेदोपाध्याय पुरस्कार-हैदराबाद से श्री दयानन्द रेड्डी।

छात्रवृत्ति- 1. ऋषि उद्यान गुरुकुल के ब्रह्मचारी ध्रूव आर्य-श्रीमती सुगनी देवी इनाणी आर्ष छात्रवृत्ति, 2. ब्रह्मचारी जयदेव आर्य-श्री कृष्ण दत्त शर्मा एवं श्रीमती शकुन्तला देवी आर्ष छात्रवृत्ति, 3. ब्रह्मचारी अजित आर्य श्री बिरदी चन्द इनाणी आर्ष छात्रवृत्ति वेद-गोष्ठी-विषय-वेदों और ऋषि दयानन्द के मत में ईश्वर कार।

- कन्हैया लाल आर्य, मन्त्री
परोपकारिणी सभा अजमेर

आर्य समाज ने धूमधाम से मनाया वार्षिक सम्मेलन

आर्य समाज सेक्टर-6 का वार्षिक सम्मेलन रविवार को डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के प्रांगण में धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा जिला-झज्जर के प्रधान आर्य हरिओम दलाल ने बताया कि इस समारोह में मुख्यातिथि नगर परिषद् चेयरपर्सन सरोज राठी रही, जबकि अध्यक्षता आचार्य विक्रम देव ने की। समारोह के मुख्य वक्ता आर्य समाज के विद्वान् एवं कन्या गुरुकुल लोवा कलां की प्राचार्या डॉ. राजन मान व श्री स्वामी रामानन्द जी विशिष्ट वक्ता रहे। समारोह का आरंभ सुबह नौ बजे हवन के साथ हुआ। उसके बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में कन्या गुरुकुल की छात्राओं व डी.ए.वी. स्कूल की छात्राओं ने अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। समारोह में आर्य समाज बादली से अजीत सिंह, गुभाना माजरी से आर्य उमेद सिंह, आसौदा से राज्यपाल आर्य, सोमवीर आर्य, सर्वहित पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामबीर आर्य, सतपाल वत्स, मास्टर सतपाल दहिया, मास्टर रामचन्द्र रूहिल, राजेश राठी, जयपाल दहिया, संतलाल मलिक, सतबीर राठी, सत्यमुनी वशिष्ठ, अतर सिंह दलाल, शिव स्वामी, यशवीर दलाल, राजपाल छिल्लर, अंजु आर्या, कौशल्या आर्या, लक्ष्मी आर्या, सुदेश आर्या, संता आर्या, अनु आर्या, प्रतिभा आर्या आदि ने भाग लिया।

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि के प्रधान हुए दिवंगत

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि के यशस्वी प्रधान सुरेशचन्द्र आर्य जी का आकस्मिक निधन से समस्त आर्यजगत में शोक कि लहर दौड़ गई। उनका स्मृति यज्ञ 27 अक्टूबर को किया गया। ज्ञात रहें कि जबसे स्व. श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने प्रधान का पद सम्भाला था तब से ही आर्यसमाज निरन्तर उन्नति के शिखर को छू रहा था। अत्यन्त शोक का विषय है कि उन्हीं के मार्ग निर्देशन में 30 से 2 नवम्बर 2025 तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित हो रहा था लेकिन हमारे मन कुछ और विधाता के मन कुछ और स्व. श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एक सफल उद्योगपति भी थे और उनका तन-मन-धन ऋषि दयानन्द के मिशन के लिए समर्पित था। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संरक्षक श्री सत्यानन्द आर्य, श्री प्रधान कन्हैयालाल जी आर्य जी, उपप्रधान श्री सत्यपाल वत्स आर्य जी, मन्त्री राजवीर आर्य जी व कोषाध्यक्ष श्री अशोक जून जी ने भी इसे आर्य समाज की बहुत बड़ी हानि होना बताया और सभी ने कहां कि वे एक बहुत अच्छे नम्र स्वभाव के सरल प्रकृति के इंसान थे। आत्मशुद्धि आश्रम परिवार उनके परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करता है और प्रधान जी को भावभीनि श्रद्धांजलि समर्पित कहता है।

-विक्रम देव नैष्टिक

वेद सन्देश

विश्व का एकमात्र राजा

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

महाँ असि महिष वृष्ण्येभिर्,
धनस्पृदुग्र सहमानो अन्यान्।
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा,
स योधया च क्षयया च जनान्॥

– ऋग् 3.46.2

ऋषि: **गाथिनो विश्वामित्रः**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **त्रिष्टुप्।**

(महिष) हे महनीय! **(उग्र)** हे उग्र! **(धनस्पृत्)** धन का दाता, (और) **(अन्यान्)** नास्तिकों को, **(सहमानः)** पराभूत करता हुआ (तू) **(वृष्ण्येभिः)** वर्षक गुणों और बलों से **(महान्)** महान् **(असि)** है। (तू) **(एकः)** एकमात्र **(विश्वस्य)** सारे **(भुवनस्य)** जगत् का **(राजा)** राजा (है)। **(सः)** वह (तू) **(जनान्)** भक्तजनों को **(योधय)** संघर्ष करवा **(क्षयय च)** और बसा।

हे हृदयाधिराज परमात्मन्! तुम 'महिष' हो, महान् हो, परम महनीय हो। तुममें महत्ता की पराकाष्ठा है। हम अमहान् क्षुद्रजन तो तुम्हारी गगनचुम्बिनी, सर्वव्यापिनी महत्ता को देखकर विस्मय से स्तिमित हो जाते हैं। तुम 'धनस्पृत्' हो, सर्वविध ऐश्वर्यों के प्रदाता हो। इस जगतीतल में जो भी विविध ऐश्वर्य भरे पड़े हैं, उन्हें उत्पन्न करने वाले हम मानव नहीं है, प्रत्युत तुम ही उनके जन्मदाता और प्रदाता हो। हम अल्पशक्ति जन तो बिना तुम्हारी दी हुई उपादान-सामग्री के छोटी से छोटी वस्तु को भी रचने में असमर्थ हैं। तुम नास्तिक जनों को परास्त करनेवाले हो। उन्हें परास्त करने के तुम्हारे पास दो उपाय हैं। या तो उन्हें तुम अपनी किसी चामत्कारिक घटना से प्रभावित कर आस्तिक बना देते हो या वे तुम्हारे विरोध में भाषण करते ही रह जाते हैं और तुम उन्हें अपने भयंकर चक्रवात से कहीं-का-कहीं उड़ा ले जाकर पटक देते हो। तुम अपने वर्षक गुणों और बलों से परम महिमान्वित हो। तुम निर्गुणों के गुण हो, निर्बलों के बल हो। जो भी सत्य, न्याय, दया आदि गुणगण तथा आत्मिक और शारीरिक बल संसार में दृष्टि-गोचर होते हैं, उन सबकी उद्गमभूमि तुम्हीं हो।

तुम ही सकल भूवन के, समस्त ब्रह्माण्ड के, एकमात्र राजा हो, सम्राट हो। राजा होने का दम भरनेवाले महान् से महान् व्यक्ति तुम्हारे सम्मुख सेवक-तुल्य हैं। तुम्हारे समकक्ष अन्य कोई विश्व का सम्राट नहीं है। जो अग्नि, वायु, सूर्य, यम, मातरिश्वा, ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र, वरूण आदि देवों की स्तुति वेदों में की गई है, वे तुम्हारे ही विभिन्न नाम हैं। वे तुमसे पृथक् सत्ता नहीं रखते।

हे राजाधिराज इन्द्र परमात्मन्! तुम अपनी प्रजाओं को कायर न बनाकर उनसे युद्ध करवाओ, संघर्षों में जूझने का साहस उनके अन्दर उत्पन्न करो, उनसे संग्राम करवाओ और उन्हें विजय दिलाओ। अकर्मण्य रहकर, संघर्षों से भयभीत होकर कोई भी मनुष्य संसार में निवास को प्राप्त नहीं कर सकता। संघर्षों में विजय ही निवास की कुंजी है। हे देव! हमारी इस प्रार्थना को पूर्ण करो, जिससे तुम राजराजेश्वर की छत्र-छाया में रहते हुए हम चरम उत्कर्ष को प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म- शुद्धि- आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा।

इच्छुक साधक-साधिकाये सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक,
चलभाष: 7988671343

सम्पादकीय

क्या मृत्यु का काल निश्चित है?

- राजवीर छिकारा

गतांक से आगे-

हमने हर तरह से और उदाहरणों के माध्यम से कि आयु का काल निश्चित नहीं है इसे घटाया बढ़ाया जा सकता है, एक अन्य उदाहरण देकर अपने पक्ष में विषय रख रहे है जिसका निष्कर्ष यही निकला कि मृत्यु का काल निश्चित नही है। एक अन्य प्रमाण देखिए-क्षय टी.बी. एक भयंकर संक्रमण युक्त रोग होता है। इस रोग की शुरूआत लगभग एक हजार वर्ष (1000) पूर्व रियासतों के राजाओं के द्वारा हुई। इसलिये इस रोग को राजयक्ष्मा भी कहते थे। राजाओं का विलासी जीवन होता था नृत्य, नशा व व्यभिचार में डुबा रहना ही इनका वास्तविक जीवन था। सिकन्दर 45 वर्ष की आयु मे चल बसा। मैंने इतिहास के माध्यम से जाना कि कोई 2 राजा ही 60 वर्ष कि आयु का जीवन जी पाता था। कुतर्क करने वाले कह देते है कि 30 वर्ष तक क्षत्री जिवें आगे जीने को धिक्कार! लेकिन हम इस धारणा को गल्त मानते है। मैं सबसे ज्यादा विश्वास देव दयानन्द कृत पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को मानता हूँ। इसलिए उसी पुस्तक का प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ- इन्द्रप्रस्थ में आर्य लोगों ने श्रीमन् महाराज यशपाल पर्यन्त राज्य किया। जिनमें श्रीमन् महाराज युधिष्ठर से महाराजे यशपाल तक वंश पीढ़ी अनुमान एक सौ चौबीस (124) राजाओं ने 4157 वर्ष 9 मास व 14 दिन समय हुए इन सब आर्य राजाओं का राज्य काल किसी ने देखना है तो वह 11वें समुल्लास में देख सकता है। मैं तो यहाँ विषायानुसार इन राजाओं के नाम दे रहा हूँ जिन्होंने 50 वर्ष से अधिक समय तक राज किया। श्रीमन् महाराज युधिष्ठर ने 36 वर्ष से ज्यादा समय तक राज किया। जब महाभारत का युद्ध हुआ तो उस समय अनुमान अनुसार सभी पांडवों की आयु 70 से 80 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। क्योंकि इनके दादा भीष्म पितामह की आयु 175 वर्ष थी। इसलिए राजा युधिष्ठर की कुल अनुमानित आयु जिसमें वानप्रस्थ व संन्यास आश्रम भी सम्मलित है 125 वर्ष से भी अधिक होती है। अभिमन्यु भी जिसकी अनुमानित आयु 35 वर्ष की रही होगी भी महाभारत युद्ध में भाग ले रहा था। युधिष्ठर महाराज जी की 30 पीढ़ी ने 1770 वर्ष 11 मास 10 दिन तक राज किया। इन 30 पीढ़ियों में राजा परीक्षित 60 वर्ष, राजा जनमेजय 84 वर्ष, राजा अश्वमेघ 82 वर्ष, द्वितीयराम 88 वर्ष, छत्रपाल 81 वर्ष, चित्ररथ 75 वर्ष, दुष्टशैल्य 75 वर्ष, राजा उग्रसेन 78 वर्ष, राजा शूरसेन 78 वर्ष तथा अन्य 11 राजाओं ने 50 वर्ष या इससे अधिक समय तक राज किया। मैं इसमें यह सिद्ध करना चाहता हूँ कि जो राजा 88 वर्ष तक राज करेगा उसकी कितनी आयु होगी? अगर उस समय आयु परमात्मा ज्यादा देता था तो वह पक्षपाति हुआ न्यायकारी कहां हुआ। अन्य राजाओं ने भी 50 वर्ष तक राज किया। मेरा यह मानना है कि जो राजा 50 वर्ष तक राज्य करने योग्य है वह अवश्य ही 100 वर्ष से अधिक जारी आयु प्राप्त करता होगा। लेकिन उनकी दिनचर्या ऋषि-मुनियों जैसी होती थी। युद्ध करना पड़ता था तो स्वयं युद्ध मे उतरते थे। इस तरह से यह लम्बी आयु अपनाने का हर सम्भव प्रयत्न करते थे और उनकी आयु लम्बी होती भी थी। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में पढ़ने को मिलता है- **अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्द्धन्त आयुर्विद्या यशोबलम॥** मनु.

जो सदा नम्र सुशील विद्वान् और वृद्धों की सेवा करता है, उसकी आयु, विद्या, कीर्ति और बल ये सदा चार सदा बढ़ते है और जो ऐसा नही करता उनके आयु आदि चार नहीं बढ़ते।

प्रिय पाठकों! मैं तो ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों को सत्य वचन महाराज की तरह मानता हूँ। इसी तृतीय समुल्लास में लिखा मिलता है की उत्तम ब्रह्मचर्य 48 वर्ष पर्यन्त करता है उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विधाओं को ग्रहण करते हैं और इसी प्रकार उत्तम ब्रह्मचर्य का सेवन करके पूर्ण अर्थात् चार सौ वर्ष

पर्यन्त आयु को बढ़ावें। अब इससे बढ़कर और क्या प्रमाण चाहते है वे मित्रगण जो आयु को निश्चित मानते है, श्वासों को निश्चित मानते है। अगर किसी पाठक के पास निश्चित आयु का वेद का कोई मन्त्र हो तो कृप्या सम्पादक महोदय को भेजने का कष्ट करे, क्योंकि इस लेख के पश्चात् अन्तिम लेख ही आयेगा। विषय अत्यन्त गम्भीर है आप चिन्तन करके देखिए। सत्यार्थ प्रकाश के दसवें समुल्लास में लिखा मिलता है कि जिन पदार्थों से स्वास्थ्य रोगनाश बुद्धिबल पराक्रम और आयु वृद्धि होवे उन तण्डुलादि, गोधूम, फल, मूल, कन्द, दूध, घी, मिष्ठादि पदार्थों का सेवन यथा योग्य करना ही भक्ष्य है। साफ लिखा है कि उचित आहार के सेवन से आयु आदि कि वृद्धि होती है। अगर आयु निश्चित होती तो ऋषि दयानन्द ऐसा क्यों लिखते?

इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए मैं एक उदाहरण के माध्यम से अपने विषय के पक्ष में एक और उदाहरण दे रहा हूँ। आर्य समाज और वेदों के विद्वान् पं. सातवलेकर जी हुए है जिन्होंने वेदों का भाष्य भी किया है। वे मेरे विषय की पुष्टि करते हुए लिखते हैं कि 'मैंने अपना जीवन वेदानुकूल व्यतीत किया है। जो भी नियम 100 वर्ष कि आयु के बताये है उनका दृढ़ता से पालन किया है। अगर मेरी आयु 100 वर्ष की नही हुई तो मैं मरते 2 लिख जाऊँगा कि वेदो में यह बात झूठी लिखी हुई है'। स्मरण रहे कि सातवलेकर जी 102 वर्ष कि आयु प्राप्त करके दिवंगत हुए। एक और उदाहरण देता हूँ पो. राममूर्ति का जो विश्व प्रसिद्ध पहलवान हुए है। जब वे 8वीं कक्षा में पढ़ते थे तो इन्हें क्षय रोग हो गया। उस समय इसे बड़ा भयंकर रोग समझा जाता था। अध्यापकों को ज्ञात होने पर उसे स्कूल मे आने के लिये निषेध कर दिया। घर वालों की तरफ से भी तिरष्कार देखने को मिला तो उस 14-15 वर्ष के बालक ने आत्म-हत्या का निश्चय किया और इसी उद्देश्य से वह नदी कि तरफ चल पड़ा। उसी नदी के किनारे एक महात्मा भी कुटिया बना कर साधना करते थे। उनकी नज़र उस बालक पर पड़ी तो बुद्धिमान साधु ने हाव-भाव से जान लिया कि यह लड़का नदी में कूदकर आत्म-हत्या कर सकता है तो महात्मा ने आवाज दे कर राममूर्ति को बुलाया तो पास जाने पर वह महात्मा के आगे फूट-फूट कर रोने लगा और अपनी समस्या भी बतलाई। साधु ने उसे प्यार से कहा बेटे इसमें आत्म-हत्या कि क्या आवश्यकता है? अगर तुम तपस्या करो तो मैं तुम्हें ठीक कर दुंगा। उस बालक ने कहा महात्मा अगर आप मुझे सारी रात-दिन पानी में भी खड़ा रहने के लिये कहोंगे तो भी मैं तैयार हुँ। महात्मा को आयुर्वेद का भी ज्ञान था। इलाज व कठोर ब्रह्मचर्य के पालन से वह बालक विश्व का सबसे शक्तिमान पुरुष बन गया। अब इसमें क्या विचार उन भाईयों के जो आयु को निश्चित मानते है। अगर ईश्वर आयु को निश्चित करता है तो फिर जीव कर्म करने में कहाँ स्वतन्त्र रहा? वेदों कि बात भी सत्य नहीं ठहरती।

बाल-विवाह से आयु का नाश 'सोलह वर्ष से न्यून वयवाली स्त्री से व पच्चीस वर्ष से न्यून आयु वाला पुरुष गर्भ स्थापना करे तो...... उत्पन्न हो तो चिरकाल तक ना जीवें वा जीवें तो दुर्बलेन्द्रिय हो' (स. प्र.चतुर्य)। मनु महाराज स्पष्ट लिखते है कि ब्रह्मादि प्रथम चार प्रकार के विवाह होने से दीर्घजीवी पुत्र पैदा होते है। इसी विषय में मनु महाराज लिखते है कि रजस्वला स्त्री से सम्भोग करने वाले कि आयु घट जाती है। (4/41 तथा 3/39-40) पंच महायज्ञों का फल भी आयु को बढ़ाने वाला ऋषि दयानन्द बतलाते है (स.प्र. चतुर्य)

एक वेद मन्त्र है प्रायः हम आर्य समाज के मन्चों से इसका उच्चारण सुनते है। **ओम् स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्॥** (अथर्वेद)

इस मन्त्र के माध्यम से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना कि गई है कि हमें दीर्घ आयु, बलशाली, प्राण, धन्य-धान्य, कीर्ति व हम अपने जीवन को इस योग्य बनाएं की हम मोक्ष तक प्राप्त करें।

जापान देश में औसत आयु 84 वर्ष है जो कि हमारे देश से 20 वर्ष अधिक है। दैनिक भास्कर में एक खबर आई की ये पाँच आदतें जापानियों की आयु लम्बी करती है। उस समय हम अपने विचार पत्रिका में लिख रहे थे। सोचा-अन्तिम लेख में यह लिखेंगे। जब आयु को घटाया बढ़ाया ही नहीं जा सकता तो इस खबर का क्या महत्त्व की इन आदतों से जापानी लम्बी उम्र प्राप्त करते है। साथ मे उन पाँच आदतों का वर्णन

भी किया गया। जो इस प्रकार है:-

1. खाना दवा है, बस पहचानने की जरूरत है-जापानी केवल पेट भरने के लिये नही बल्कि हम क्या खा रहे है और यह भोजन हमें किन-2 रोगों से बचाव करेगा, इसका भी ध्यान रखते है। पौषक आहार और एंटीओक्सीडेंट से भरपूर होता है।

2. हारी हाची बु: पेट 80 प्रतिशत भरे उम्र 100 प्रतिशत पाएं- इसका अर्थ है तबतक खाएं जबतक आपका पेट 80 प्रतिशत न भर जाए और आयु इसका वर्णन नही कर रहा हुँ बल्कि हैडिंग ही बता रहा है कि ओवरईटिंग से बचे। क्या हमारे देश में हम यह पालन करते है?

3. चलना फिरना व्यायाम नही, जीवनशैली है- अपनी रोजमर्रा की जीवनशैली में पैदल चलना, बागवानी, साईकिल चलाना आदि अपनी आदत ही बना लेते है।

4. इकीगाई का उद्देश्य जानने के लिये- जापानी भाषा में इकीगाई का तात्पर्य होता है कि आपके जीवन का क्या उद्देश्य है। यह क्या कर रहा है, क्या करना चाहता है, कहां जा रहा है और क्यों जा रहा है। इससे व्यक्ति मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य बेहतर रहता है।

5. प्रकृति और शांतिपूर्ण परम्पराओं से जुड़ाव- जापानी में लोग प्रकृति के काफी नजदीक रहते है। ध्यान, योग में समय व्यतीत करते है। स्क्रीन से दूरी भी बनाते हैं।

अब पाठक वृन्द यह आर्टिकल मैंने तो छपवाया नहीं। फिर क्यों जापान के अन्दर आयु लम्बी मिलती है। वहां तो 100 वर्ष की आयु के बहुत से व्यक्ति मिल जायेंगे। मेरा कहना है कि क्या ईश्वर पक्षपाती है? जबकि जापानी तो उसके सत्य स्वरूप को भी नहीं जानते है। ईश्वर न्यायकारी है और उसी हिसाब से कर्मों का फल देता है। अन्त में तो हम यही कहेंगे कि आयु को घटाया बढ़ाया जा सकता है हां! परमात्मा ने आयु निश्चित कि है और वह है 400 वर्ष। यह मैं नहीं कह रहा वेद, ऋषि व विद्वान् लोग प्रमाणों के साथ कह रहे है। आईये अंत में एक बहुत बड़े कवि कि इन पंक्तियों से विराम देते है। ईश्वर अपना कार्य करता है जीव अपना कार्य करने में स्वतन्त्र है लेकिन फल परमात्मा ही देता है जिससे कि आयु का घटना बढ़ना सिद्ध होता है।

चहल और पहल बनाते थे,
न ही कोठी महल बनाते थे।
आर्य नर और नारी अपना
स्वास्थ्य बनाया करते थे॥
तेल लगाकर नहाते थे कर
संध्या हवन रचाते थे।
डण्ड बैठक एक हजार करके
गात बनाया करते थे॥
दुध गऊ का पीते थे,
जब साल 150 जीते थे।
जौ चावल मूंग ज्वार गेहूं का
भात बनाया करते थे॥
डाल कर गाय का घी
इसमें लपा लप खाया करते थे।

-राजवीर छिक्कारा (मो. 9811778655)

एक सोच

पता नहीं कब मिलेगा
हमारा ऐच्छिक
जिसकी प्रतीक्षा में
हम अपने अस्तित्व को बनाएँ हैं
इस नश्वर संसार में
किसी ने हमें सुझाया
एकाग्रचित से निरन्तर प्रयास करते रहो
ऐच्छिक मिलेगा अवश्य ही
क्योंकि-
कर्म में हमारा अधिकार है
फल में कदापि नहीं।

जीवन: दो दृष्टि

जीवन-
एक चारपाई-सा
इसके सिरहना व पांत हैं
सुख-दु:ख के द्योतक
जीवन-
जुआरी के उस पाशे के समान
जिसकी स्थिति का निश्चित बोध नहीं होता।

-मा. राजेन्द्र सिंह डबास

प्राण में भेद

❑ हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

एक प्राण वह है जिससे समस्त प्राणी जगत श्वास प्रश्वास लेते हैं और दूसरा प्रणव है जिसे प्राणेश्वर कहा जाता हे, इस प्रणव को ओ३म् भी कहते हैं। जिससे प्राणी श्वास-प्रश्वास लेते हैं वह एक शक्ति है। यह शक्ति सर्वत्र विद्यमान है उसी से जठराग्नि प्राणियों के शरीर के अन्दर विद्यमान रहता है और जठराग्नि से ही प्राणियों के हृदय की गति=यन्त्र अ विरत चलती रहती है और जीवन कायम रहता है। किन्तु प्राणियों के प्राण में जो आत्मा है उससे उसका अटूट सम्बन्ध रहता है। आत्मा के न रहने पर प्राणियों का प्राण जो एक सूक्ष्म शक्ति है वह आत्मा के साथ चला जाता है। तात्पर्य यह कि जब आत्मा का शरीर से किसी कारणवश वियोग होता है तब वह अपने प्राणों को समेट लेता है और प्राणि मर जाते हैं। प्राण और आत्मा दोनों अमर हैं। आत्मा एक अत्यन्त सूक्ष्मशक्ति है। आत्मा जहाँ जाता है वहाँ उसके साथ सभी मौलिक तत्व अर्थात् शरीर रचने वाली शक्तियाँ उसके साथ चली जाती हैं। जिस प्रकार रानी मधुमक्खी के साथ और मधुमक्खियाँ हैं। जैसे रानी मधुमक्खी जहाँ अपनी नई दुनियाँ बनाने बैठती है वहीं उसके साथ रहने वाली और मधुमक्खियाँ उसके धार बनाने में जुट जाती हैं। उसी प्रकार जब आत्मा का शरीर से सम्बन्ध होता है तब उसका जीवन कार्य प्रारम्भ होने लगता है। उसका प्रथम शरीर वीर्य कोश में उत्पन्न होने लगता है। दूसरा जन्म माता के गर्भाशय में पलता है और तीसरा जन्म माता के गर्भ से इस दुनिया में आता है। तब उसका प्राण, 'वायुमंडल से श्वांस लेने लगता है।' अत: प्राण की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। परन्तु इसके पहले धीरे-धीरे उसकी जैसी योनि रहती है वैसा ही उसके गर्भ में ही सर्वांग बनने लगते हैं और अन्दर की शक्ति बाहर के पंचतत्व उपादनों को आकर्षित कर सूक्ष्म शरीर के द्वारा स्थूल शरीर का वह आत्मा विकास करने लगता है। अत: आत्मा पंचतत्व के द्वारा ही शरीर की रचना करता है। वेद ने भी कहा है- **'पंचौदन: पंचधा...''** (अथर्व नवम काण्ड)

पांच भूतों से खींचा हुआ (जीवात्मा) पांच प्रकार (गंध, रस, रूप, स्पर्श, शब्द से) तीन (शरीर, इन्द्रिय और विषय) ज्योतियों (दर्शन साधनों) को पाने की इच्छा करता हुआ विक्रम (पराक्रम) करे।

अत: प्राण जीवात्मा का उपकरण है प्राण का कार्य है गर्भ के लिए अण्डे को उत्पन्न करना और शरीर के अन्दरूनी क्रियाओं को सक्रिय रखना और जीवात्मा का कार्य है आयु के अनुसार प्राण से संयुक्त होकर कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय को सक्रिय रखना जब पूर्व जन्म के अनुसार प्राण का कार्य समाप्त हो जाता है तब उसकी क्रिया बन्द हो जाती है और तब श्वास प्रश्वास भी बन्द हो जाता है। आत्मा का उपकरण का न करने के कारण वह स्वयं इस स्थूल शरीर से पृथक हो जाता हे। (मृत्यु का कारण दो ही होते हैं एक बीमारी और दूसरा दुर्घटना। ईश्वर अपने ऊपर दोष नहीं लेता।)

मृत शव में न आत्मा रहता है न प्राण। किन्तु उद्भिज में प्राण रहता है इसलिए उसमें केवल कतृत्व और भोकतृत्व के गुण पाए जाते हैं।

दर्शन शास्त्र में लिखा है कि-प्राण, अपान, पलक मीचना, पलक खोलना, जीवन यह सब प्राण के धर्म हैं। स्पन्दन को ही प्राण कहते हैं। ''फैलना और सिकोड़ना'' इस प्रक्रिया की संज्ञा 'स्पन्दन' है जो वैज्ञानिक कथन के समकक्ष है। जिसे ऋषियों ने इस प्रकार कहा है। प्राणो वै समंचन प्रसारणम्। (शतपथ 8/4/10) फैलना सिकोड़ना 'केन्ट्रैक्शन, एक्सपैन्शन' यह सब क्रियाएं शरीर के अतिरिक्त उद्भिज में भी है।

अथर्ववेद में क्लोरोफिल का वर्णन मिलता है। इसमें क्लोरोफिल के लिए यदि (रक्षकतत्त्व) शब्द आया है। इसकी विशेषता बताई गई है, इसके कारण वृक्ष-वनस्पतियों में हरियाली रहती है।

'अविवैनाम देवता ऋते नास्ते परीकृता। तस्या रूपेण इमं वृक्षा हरिता हरितराज:। (अर्थव. 10.08. 31), अथर्ववेद का कथन है कि वृक्षों में प्राण है और वे सांस लेते हैं। महद्ब्रह्मयेन प्राणन्ति वीरुध:। अर्थव. 1/32/1।

यहाँ तक मैंने प्राण के सम्बन्ध में कहा कि

जीवात्मा से परे वृक्षों में भी प्राण है। दूसरा मूर्त और अमूर्त सारे जड़ पदार्थों में भी प्राण विद्यमान हैं तभी वह सक्रिय रहते हैं। प्राण प्रदाता। प्रणव अर्थात ईश्वर है वह भी प्राण स्वरूप है किन्तु इतना सूक्ष्मं हैं कि उसे अभौतिक ही कहा जा सकता है वह सर्वत्र व्यापक है, वह इन प्राणों में भी व्यापक है तभी तो उनमें उस प्रेरक शक्ति का संचार होता रहता है। वहाँ परमेश्वर सर्वशक्तिमान है वह सारे दृश्य अदृश्य शक्तियों के प्रकाश में विद्यमान है। प्राण के तरंग इस भौतिक प्राण के आधार पर ही होता रहता है, वह प्रणव, प्राण जैसा विभिन्न प्रकार का नहीं है वह तो एक महान और अनन्त सर्वत्रपूर्ण है। आत्मा शक्ति का जो ज्योति दिखलाई देता है वह उसमें भी विद्यमान है जो साधक उस ज्योति में अपने योगबल से प्रवेश करते हैं वही जानते हैं कि वह कितना आनन्द स्वरूप है और उसका सत्य कितना महान है।

वह क्या है-वह 'भूः' प्राणस्वरूप और पृथ्वीलोक का नियन्ता है। (भुवः) सर्वदुःख नाशक और अन्तरिक्ष लोक का नियन्ता है। (स्वः) आनन्दस्वरूप वह स्वर्ग (मुक्ति जगत्) का नियन्ता है। (महः) वह महान और महत् लोकों का नियन्ता है। (जनः) वह सबका उत्पत्तिकर्ता? सबका प्रेरक और पोषक है। (तपः) वह तेज स्वरूप और प्रवर्तक है। (सत्यम्) वह सत्यस्वप और सर्वोपरि है।

अतः इन सप्त महाव्याहृतियों में उसका गुण, क्रिया और स्वभाव विद्यमान है। वेद का उपदेश है कि

अप्सु ते जन्म दिवि ते संधस्थं समुद्र अन्तर्महिमाते पृथव्याम्। शुनो दिव्यस्म यन्म हस्तेन ते हविषा विधेम॥ (अथर्व. 6/3)

पदार्थ- (अप्सु) प्राणों में (हे परमेश्वर) (ते) तेरा (जन्म) प्रादुर्भाव है (दि वि) सूर्यमण्डल में (त्ते) तेरा (सघस्थम्) सहवास है, (समुद्रे अन्तः) अन्तरिक्ष के भीतर और (पृथिव्याम्) पृथिवी में (ते) तेरी (महिमा) महिमा है। (शुनः) व्यापक (दिव्यस्यं) दिव्यस्वरूप परमेश्वर का (यत्महः) जो महत्त्व है (तेन) उसी (महत्त्व) से (ते) तेरे लिए (हे परमेश्वर!) (हविषा) भक्ति के साथ (विधेम) हम सेवा करें॥3॥

परमेश्वर की रचना का ज्ञान अनन्त है उसने प्राणियों को कैसे अस्तित्व में प्रकट किया उसके पहले उसे रचने की सामग्री जो उपादाने हैं उन्हें पहले रचा, जैसा कि वेद ने संक्षिप्त रूप से वर्णित किया है।

'वातो वा मनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशति'
(यजु. नवमोध्याय)

जो एक समष्टि वायु, प्राण, अपाण, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय (एकादश) बारहवां मन, तथा इसके साथ श्रोत आदि दश इन्द्रिय और पाँच सूक्ष्मभूत ये सब 27 पदार्थ ईश्वर ने इस जगत में पहले रचे हैं'

इस प्रकार प्रकृति से बने तत्वों, उनसे परे जीवात्मा और उनसे परे परमेश्वर है। तात्पर्य यह है कि उन्हीं सबके द्वारा उस परम माता-पिता परमात्मा को हम लोग जान रहे हैं और उसके महिमा को देखकर हम सब उनकी प्राप्ति के लिए सन्ध्योपासना और यज्ञादि शुभ कर्म कर रहे हैं।

विभिन्न प्रकार की शक्ति, विभिन्न प्रकार की सृष्टि, विभिन्न प्रकार के प्रकाश और विभिन्न प्रकार के मौलिक सात रंग (बैंगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, कमला और लाल) जिनके संयोग वियोग से अन्य रंग प्रकृति में बनते हैं, और इन सबके अलावा इस शरीर के रचना करने में जो विभिन्न प्रकार के उपदानों ने कार्य कर-रस, रक्त, माँस, मेदा, अस्थि, मज्जा एवं शुक्र। इसके अतिरिक्त स्नायु, शरीर के जोड़, मस्तिष्क आदि को जिसने अस्तित्व में प्रकट किया है वह कौन हो सकता है? भूत के भीतरी ढांचा को वैज्ञानिकों ने कण तरंग कहा है, जो निरे जड़ पदार्थ है, उनमें स्वयं गति और परिवर्तन होने की शक्ति नहीं है, तो उन्हें कौन सक्रिय किया और करता है, उन सब शक्तियों को कहाँ से प्रेरणा मिलती है। तात्पर्य है कि इस शरीर की रचना और समुद्र के विचित्र जीव-जन्तुओं को बुद्धिपूर्वक किसने कैसे इनकी सांचा को बनाया। बनाने वाले का क्या प्रयोजन था और आदि में ये कैसे बन गए? क्या इन सबका उत्तर विज्ञान दे सकता है? अभी बहुत से ब्राह्माण्ड में अनजाने में सृष्टियों का निर्माण हुआ अथवा हो रहा होग, उसका कर्म-कार्य कारण खोजने से पता चलता है कि एक प्रभाव एक प्रेरणा, एक विज्ञान से पूर्ण एक नियम है जो वह सर्वव्यापक सर्वत्र चुम्बक जैसा पूर्ण अदृश्य है, जिसे आत्म विश्वासी और योगी लोग ही ध्यान द्वारा देख सकते हैं और वह तभी देखा जा सकता है जब मन को परिवर्तन से रोक दिया जाता है। क्योंकि सभी भौतिक परिवर्तनशील हैं किन्तु जो अपरिवर्तनशील हैं उसकी

प्राप्ति के लिए अपने मन और वृत्ति को रोकते रहने से अभ्यास द्वारा जिस समय साधक का मन एक स्थिर हो जाता है उस समय वह उसके आनन्द स्वरूप प्रकाश को देखने लगता है। किन्तु जिस प्रकार हिलते हुए तरंगजल में अपने स्वरूप को कोई नहीं देख सकता उसी प्रकार उसे भी बाहर की भौतिक सृष्टि अथवा सांसारिक माया में फंसा हुआ मन उसे नहीं देख सकता। उस अभौतिक ज्योति को देखने के लिए स्वयं को अन्दर की ज्ञान दृष्टि को स्थिर करना होगा और जब ध्यानियों का ध्यान उसकी महानता के प्रेम में मग्न हो जाता है तब उसका मन एकाग्र होने लगता है। किन्तु जब तक प्राण चलायमान रहेगा तब तक उसमें व्यापक उस महान ज्योति को कोई भी ध्यानी नहीं देख सकता। जब मन और प्राण स्थिर होने लगता है तभी उस आत्मशक्ति के अन्दर जो विद्यमान है उसका दर्शन होने लगता है किन्तु किञ्चित मन में परिवर्तन होने से वह नहीं दिखता। यह सब कार्य बहुत साधना और आहार विचार तथा मन की शुद्धि से सिद्ध होता है। गलत साधना से, तर्क से, ढांक ढोल बजाने से अथवा तीर्थ करने से वह प्राप्त नहीं होता (गीता में लिखा है)। इसके लिए किसी ज्ञानी वैदिक गुरु की आवश्यकता होती है जो ठीक-ठाक साधना का नियम बताकर करा सके।

गुरु क्या है? एक दर्पण के समान है उदाहरण के लिए मुख पर लगा दाग स्वयं नहीं दीखता। किन्तु गुरु के सामने जाने से वह त्रुटि दाग दोष दिखलाई देने लगता है और उसे छुड़ाने के लिए वह आचार्य उपाय बता देते हैं। इस प्रकार शुद्ध हो जाने पर आचार्य की कृपा और प्रतिभा से वह स्वयं को समझाने लगता है और उस शिष्य में एक परिवर्तन हो जाता है बुद्धि विचार शुद्ध होने लगता है।

अब शरीर के चक्र के बारे में थोड़ा जानकारी कर लेना ठीक है। चक्र क्या है? हारमोन्स अर्थात् सूक्ष्म स्नायु और प्राणों का स्थान है। इनके जागृत हो जाने पर अज्ञानी भी ज्ञानी हो जाता है और भी अन्य सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। 'वैदिक सम्पदा' में लिखा है कि-''वेद ने इस शरीर में 8 चक्रों की स्थिति बताई हैं। इन चक्रों का सम्बन्ध सुषुम्णा नाड़ी से है। सुषुम्णा का अधोमुख भाग भौतिक प्राण-शक्ति के चक्रों में क्रमशः भेदन के लिए प्रवेश का द्वार है और मस्तिष्क में कपालों की मध्यसन्धि भाग में सुषुम्णा का दूसरा द्वार ब्रह्मरन्ध्र में है। ब्रह्मरन्ध्र में से इस दिव्य प्रकाशमय, ज्ञानमय प्राण का शरीर में प्रवेश होता है जो सविता से इस लोक पर अवतरित होता है। वहाँ सहस्रार चक्र है। योगी जन इसी मार्ग से ब्रह्मरन्ध्र से प्राणों का विसर्जन करके सूर्य मण्डल को भेदकर (यह आध्यात्मिक सूर्य है जो सूर्य दिखता है वैसा ही उसका प्रतिबिम्ब के समान होता है, जो जलाने वाला नहीं होता) परमधाम को प्राप्त करते हैं। इन दोनों के ज्ञान से ही सुषुम्णा मार्ग में प्रवेश करने से अष्ट चक्रों का दर्शन एवं ज्ञान हो पाता है।''

दीर्घ जीवन प्राणों पर ही आश्रित है। स्वास्थ्य सम्पादन प्राणों पर ही आश्रित है। जीवन सुख प्राणों पर ही आधारित है। प्राण ही जीवन है। प्राण और मन दोनों ही मिलकर इस काया रूपी अपूर्व नगरी को स्वर्ग एवं नरक बना रहे हैं। इन्हीं से यह देह देव बन जाता है और इन्हीं से असुर और रक्षस भी बन जाता है।

- मु. पो.-मुरारई, जिला-वीरभूम (पं. बंगाल)

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507,

चलभाष : 09416054195

सृष्टिकर्ता ईश्वर की न्याय-व्यवस्था से मिलते हैं हमें जीवन तथा सुख-दुःख

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हम मनुष्य कहलाते हैं। हमारा जन्म हमारे माता-पिता की देन होता है। माता-पिता को हमें जन्म देने व पालन करने में अनेक कष्ट उठाने पड़ते हैं। यदि हमारे माता-पिता यह सब न करते तो हमारा न जन्म होता और यदि जन्म होता भी तो हम स्वस्थ, बुद्धिमान व ज्ञानवान न बनते। हमारे माता-पिता ने ही हमें योग्य गुरुओं व विद्यालयों में भेजकर हमारी बुद्धि का अन्धकार दूर कर हमें ज्ञान से आलोकित किया है। इस कारण सभी मनुष्य अपने-अपने माता-पिता के उपकारों से उनके ऋणी होते हैं। यह ऋण कोई भी सन्तान कभी नहीं उतार सकती। हमारे माता-पिता सन्तान को जन्म देने के लिए अपने सुख-सुविधाओं का त्याग अवश्य करते हैं, इस कारण वह पूजनीय व वन्दनीय है, परन्तु कोई माता-पिता मानव शरीर की उत्पत्ति का ज्ञान नहीं रखता। मानव शरीर की रचना व उत्पत्ति तो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अनन्त बार इस सृष्टि को रच चुके ईश्वर द्वारा ही की जाती है। निराकार, सर्वव्यापक तथा सर्वातिसूक्ष्म होने से वह भौतिक आंखों से दिखाई नहीं देता परन्तु उसकी रचना का दर्शन व उसके स्वरूप का गहन चिन्तन मनन ही उसके गुण, कर्म व स्वभाव का दर्शन कराता है। इससे ज्ञात होता है कि हमारे शरीर में विद्यमान सूक्ष्म, एकदेशी, समीप व चेतन तत्व जीवात्मा को सशरीर जन्म देने वाला व उसकी आवश्यकता की सभी वस्तुओं को इस सृष्टि को रच कर इसमें निरन्तर उत्पन्न करने वाला एकमेव परमात्मा ही है। हमें उसे यथार्थरूप में जानने का प्रयत्न करना चाहिए और उसके उपकारों के प्रति नियमित रूप से कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए उसकी उपासना करनी चाहिए।

इस सृष्टि के कर्ता ईश्वर को बिना वेद ज्ञान व वैदिक साहित्य के अध्ययन के नहीं जाना जा सकता। वेद, उपनिषद्, दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय आदि ग्रन्थों का अध्ययन करने से ईश्वर को यथार्थरूप में जाना जाता है। सृष्टि के आदि काल में भी अमैथुनी सृष्टि में हमारे ऋषियों व इतर मनुष्यों ने परमात्मा प्रदत्त वेदज्ञान के द्वारा ही ईश्वर, जीवात्मा व सृष्टि सहित अपने कर्तव्यों व संसार के विभिन्न पक्षों व रहस्यों को जाना था। संसार में ज्ञान की कोई सीमा नहीं है। ज्ञान अनन्त है। मनुष्य अपने जीवन में केवल ज्ञान का कुछ भाग ही जान व प्राप्त कर सकता है। मनुष्य के लिए आवश्यक सभी विद्याओं का ज्ञान वेदों में सुलभ होता हे। मनुष्य वेदज्ञान को प्राप्त होकर सभी विद्याओं का विस्तार कर सकते हैं, की हैं वह निरन्तर कर रहे हैं। प्राचीन भारत में हम देखते हैं कि भारत ज्ञान व विज्ञान से सम्पन्न था तथा देश के सभी लोग सुखी व सम्पन्न होते थे। सामाजिक, असमानता, अन्याय व शोषण जैसा व्यवहार व प्रथायें जैसी आज देखी जाती हैं, ऐसी सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत के समय तक के लगभग 1.96 अरब वर्षों में आर्यावर्त्त में नहीं थीं। आज भी समाज की सभी विकृतियों को वेदाध्ययन कर उसके अनुकूल वेद प्रचार करके तथा वेद की शिक्षाओं व मान्यताओं को देश व समाज में लागू करके दूर किया जा सकता है। वेद पूरे विश्व को ईश्वर का एक परिवार मानते हैं। अतः मनुष्य व मनुष्य के बीच किसी भेदभाव का प्रश्न ही नहीं होता। वेदों के अनुसार सभी मनुष्यों को अपनी अपनी शारीरिक क्षमता व योग्यता के अनुसार विद्या प्राप्त कर शुभ कर्म करने का अधिकार होता है। वेदों ने यह अधिकार सभी स्त्री व पुरुषों को सृष्टि के आरम्भ से प्रदान कर रखा है। प्राचीन काल में वैदिक विद्वानों की मन्त्री परिषद् ही समाज में वैदिक मान्यताओं व शिक्षाओं को क्रियान्वित किया करती थी। राजा को भी वेद के विद्वानों व ऋषियों की आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक हुआ करता था। इसी वैदिक युग को सत्य पर आधारित राज्य व रामराज्य का पर्यायवाची कहा जा सकता है।

वस्तुतः रामराज्य भी वेदों की मान्यताओं पर

आधारित राज्य ही था। राम वैदिक मर्यादाओं के पालक तथा वैदिक आदर्श राज्य के संचालक थे। उनके राज्य में सभी निर्णय व कार्य वेदानुकूल व वेदसम्मत किये जाते थे।

मनुष्य को मनुष्य जीवन परमात्मा एवं माता-पिता के द्वारा मिलता है। मनुष्य जन्म में परमात्मा की भूमिका को मुख्य व माता-पिता की भूमिका को परमात्मा की भूमिका का विचार कर गौण कहा जा सकता है। परमात्मा ने मनुष्य की आत्माओं को उनके पूर्वजन्मों के कमार्नुसार सुख व दु:ख भोगने के लिए इस संसार को बनाकर सृष्टि के आरम्भ से अद्यावधि जीवात्माओं को भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म दिए हैं। इसी प्रकार से जीवात्माओं को भविष्य में भी जन्म, जीवन व सुख व दु:ख परमात्मा से प्राप्त होते रहेंगे। इस संसार की पहेली व गुत्थी को यदि समझना है तो यह ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के अस्तित्व व क्षमाताओं को सफलता प्रदान करने के उदाहरण से जान सकते हैं। ईश्वर का अस्तित्व व सत्ता यथार्थ व सत्य है। उसके अपने गुण, कर्म व स्वभाव भी सत्य हैं। इन सबका उल्लेख ईश्वर प्रदत्त वेद ज्ञान में उपलब्ध होता है। जीवात्मा का भी अपना स्वतन्त्र अस्तित्व व सत्ता है। सभी जीवात्मायें जन्म लेने व सुख दु:ख भोगने में परमात्मा के अधीन होती है। मनुष्य योनि उभय योनि होती है। इसमें जीवात्मा स्वतन्त्रतापूर्वक कर्मों को करती है परन्तु मनुष्य योनि में भी आत्मा पूर्वजन्मों व इस जन्म के क्रियमाण कर्मों का फल भोगने में ईश्वर के नियंत्रण में ही रहती है। संसार में तीसरी सत्ता व पदार्थ प्रकृति है जो कि जड़ पदार्थ है। यह पूर्णत: परमात्मा के नियन्त्रण में है। यह प्रकृति सत्व, रज व तम तीन गुणों वाली है। इस प्रकृति रूपी उपादान कारण से ही परमात्मा इस दृश्यमान व अदृश्यमान पदार्थों से युक्त सृष्टि की रचना करते हैं। इस सृष्टि का प्रयोजन परमात्मा का अपना किसी प्रकार का मनोरंजन व सुख नहीं होता है अपितु इस सृष्टि की रचना व संचालन परमात्मा जीवों को उनके कर्मों के अनुसार सुख व दु:ख प्रदान करने में करते हैं। यदि परमात्मा जीवों को जन्म न देते तो जीव निद्रावस्था के समान आच्छादित रहते। उन्हें किसी प्रकार के सुख व दु:ख का लाभ प्राप्त नहीं होता। तब ईश्वर सृष्टिकर्ता व न्यायकारी आदि गुणों से युक्त होकर भी इन गुणों से विहीन ही माना जाता। अपने गुणों व सामर्थ्य को प्रकट करने, जीवों को स्वतन्त्रतापूर्वक कर्म करने का अवसर देकर तथा उन्हें उनके कर्मों के अनुसा सुख व दु:ख देकर ईश्वर ने अपनी सामर्थ्य व गुणों का प्रकाश कर उन्हें सफल किया है। ईश्वर के इस परोपकार के कार्य के कारण ही जीवात्मायें मनुष्य योनि में वेदज्ञान को प्राप्त होकर ईश्वर की उपासना व सद्कर्मों को करते हुए जन्ममरण से छूट कर मुक्ति को प्राप्त होती हैं। इसके साथ जीवात्मायें ईश्वर के आनन्द का भोग करते हुए दु:खों से सर्वथा रहित निश्चिन्त जीवन व मोक्षावधि को प्राप्त होती हैं। इस प्रकार जीवात्मा को जो सुख व दु:ख प्राप्त होते हैं। वह परमात्मा द्वारा ही दिये जाते हैं। जिनका आधार हमारा ही ज्ञान व कर्म हुआ करते हैं।

ईश्वर नि:स्वार्थ व निरपेक्ष भाव से संसार में अनन्त संख्या में विद्यमान जीवों को एक न्यायाधीश की भांति उनके कमार्नुसार सुख व दु:ख प्राप्त करते हैं। उन सभी जीवों के सभी कर्मों के साक्षी होते हैं। उनको सद्कर्मों की प्रेरणा करते हैं। उन सभी जीवों के सुधार के लिए ही वह जीवात्मा के पूर्व व वर्तमान जन्म के अभुक्त अशुभ कर्मों का फल दु:ख के रूप में भी देते हैं। पाप व अशुभ कर्मों का फल भोग लेने पर जीवात्मा उन उन कर्मों के बन्धनों से मुक्त होकर शुद्ध व पाप रहित हो जाते हैं। ईश्वर की यह व्यवस्था आदर्श व्यवस्था है। ईश्वर का साक्षात्कार किये हुए हमारे ऋषियों व आप्त विद्वानों ने जन्म व मरण विषयक अनेक रहस्यों से अपने ग्रन्थों द्वारा संसार को परिचित कराया है। ऋषियों की मान्यता है कि परमात्मा सभी जीवों के सभी कर्मों, चाहें वह रात के अंधेरे में किए हों या दिन के प्रकाश में, छुप कर किए हों या प्रत्यक्षरूप में, उन सबका साक्षी होता है और उन सभी कर्मों के पाप व पुण्य कर्मों का फल जीवात्मा को जन्म-जन्मान्तर में देता है।

हमें अपने पुण्य व पाप सभी कर्मों के फल भोगने पड़ते हैं। एक भी कर्म ऐसा नहीं बचता जिसका फल परमात्मा हमें न दे। अत: मनुष्य को इस पर विचार कर पाप व अशुभ कर्मों का सर्वथा त्याग करना चाहिए। ऐसा करने पर हमारे जीवन में आने वाले दु:ख नहीं होंगे। हम दु:खों से दूर रहेंगे। हम अपने पूर्व

जीवन पर दृष्टिपात करें तो हमें विदित होता है कि हमने संसार में आकर अपने ज्ञान व स्वभाव के अनुसार शुभ व अशुभ कर्म किए हैं व उनके परिणामों को भोगा है। सद्‌कर्मों की पूंजी ही मनुष्य की वास्तविक पूंजी होती है जो हमारे साथ परजन्म में जाती है और हमें सुख व दुःख देती है। यह सुख व दुःख हमें परमात्मा प्रदान कराते हैं। प्रवाह से अनादि सृष्टि में अनादि काल से यह क्रम चल रहा है। इससे पूर्व कल्पों में भी हम विद्यमान थे और हमारा जन्ममरण होता रहा था। हम परमात्मा से अपने कर्मों का सुख व दुःख प्राप्त करते हैं। वर्तमान में भी ऐसा ही हो रहा है और आने वाले अनन्त काल में भी ऐसा ही होता रहेगा। हमारी यह सृष्टि अवधि पूर्ण होने पर प्रलय को प्राप्त हो जायेगी। उसके बाद परमात्मा पुनः सृष्टि की उत्पत्ति करेंगे और पुनः सभी आत्मायें अपने-अपने कमार्नुसार जन्म लेकर सुख व दुःखों का भोग करेंगी। अतः हमें ईश्वर के यथार्थ विधान को जानने का प्रयत्न करना चाहिए। चार वेद व उनके भाष्य, उपनिषद्, दर्शन, विशुद्ध मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि, रामायण, महाभारत एवं ऋषि दयानन्द के जीवन चरित्र आदि का अध्ययन करते रहना चाहिए। इससे हमारा मार्ग प्रशस्त होगा। इससे हमारी सद्‌कर्मों में प्रवृत्ति बढ़ेगी। हम पाप कर्मों को नहीं करेंगे। सद्‌कर्मों का परिणाम हमें परमात्मा से सुख के रूप में मिलेगा। ऐसा करते हुए ही कालान्तर व भावी जन्मों में से किसी जन्म में हमें मोक्ष भी प्राप्त हो सकता है। मोक्ष ही वस्तुतः अमृत होता है। मोक्ष के समान अन्य कोई अमृत नही है। इस अमृतमय मोक्ष की प्राप्ति के लिए ही परमात्मा ने यह संसार रचा है। हमें जागरूक होकर ज्ञान की वृद्धि कर, सत्य को प्राप्त होकर तथा असत्य का त्याग कर ईश्वर का विश्वसनीय सफल भक्त व उपासक बनना है। यही श्रेष्ठ मनुष्य जीवन का आधार व स्वरूप है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हमें जो सुख व दुःख मिलते हैं वह हमारे कर्मों का ही परिणाम होते हैं जिन्हें परमात्मा अपनी करूणा, दया और न्याय व्यवस्था से हमें प्रदान करते हैं।

आंखों का फ्री जांच

आंखों की समस्या, बीमारियां निदान और बचाव

(1) जन्म के समय एक आंख में पानी आना, एनएल ब्लॉक, दवाईयां व ऑपरेशन कन्जैनिटल, कैटेरेकट, जन्म का मोतियाबिना-ईलाज ऑपरेशन (SQUINT) मैंगापन- ईलाज चश्में व ऑपरेशन। (2) स्कूल के समय मायोपिया या हाईपरमैट्रोपिया- ईलाज चश्मा। (3) चश्मा हटाने का लेसिक लेजर 18 वर्ष से 50 वर्ष तक किया जाता है। (4) 40 वर्ष पर प्रेशबायोपिया (नजदीक का चश्मा) ईलाज चश्मा नजदीक का (5) 50-60 वर्ष-मोतियाबिन्द या कैटेरेकट- ईलाज दवाईयां व आपरेशन। (6) 50-60 वर्ष या पहले भी किसी को काला मोतिया यानि ग्लोकोमा हो सकता है। ईलाज दवाईयां। (7) बी.पी. व शुगर के मरीज में रेटिनोपैथी यानि रेटीना (आंख के परदे में खून के छोटे-छोटे धब्बे बन जाते है।) ईलाज लेजर द्वारा। (8) आँखों की समस्त बीमारियों की जांच की जाती है। **सोमवार से शनिवार,** समय- 1.00 बजे से 2.00 बजे तक आंखों की फ्री जांच की जाती है। **स्थान- आत्मशुद्धि आश्रम,** बहादुरगढ़, हरियाणा, दिल्ली रोड़, मेट्रो पीलर न. 819 के सामने।

- डॉ. उमेश शर्मा जी, मो. 9811133623

अथर्ववेद में नारी की गरिमामयी स्थिति

❑ शिवनारायण उपाध्याय

नारी की स्थिति अथर्ववेद में भी लगभग वैसी है जैसी कि ऋग्वेद में वर्णन की गई है। स्त्री और पुरुष को वेद में एक-दूसरे का पूरक माना गया है। स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर ही इस संसार को आगे बढ़ाते हैं। अकेली स्त्री अथवा अकेला पुरुष अधूरा है। दोनों मिलने पर ही पूर्ण होते हैं। अथर्ववेद में भी कन्या को हेय दृष्टि से नहीं देखा गया है। उसे वेदाध्ययन का पूरा अधिकार है।

रैभ्यासीअनुदेयी नारशंसी न्योचनी।
सूर्याया भद्रमिद् वासो गाथयैति परिष्कृता॥

- अथर्ववेद 14/1/7

पदार्थ-(**रैभी**) वेद वाणी (**सूर्याया**) प्रेरणा करने वाली कन्या की (**अनुदेयी**) साथिन (समान) और (**नाराशंसी**) मनुष्यों के गुणों की स्थिति (**न्योचनी**) नीची (छोटी सहेली के समान) (**आसीत्**) हो और (**भद्रम्**) शुभ कर्म (**इत्**) ही (**वासः**) वस्त्र समान हो क्योंकि वह (**गाथया**) गाने योग्य वेद विद्या से (**परिष्कृतः**) सजी हुई (**एति**) चलती है।

भावार्थ- मन्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि वेदवाणी से प्रेरणा करने वाली कन्या की स्थिति साथिन के समान या (आयु व विद्या में) पुरुष से छोटी होने के कारण छोटी सहेली के समान मानी जानी चाहिए। उसके शुभ कर्म ही उसके श्रेष्ठ वस्त्रों के समान हैं। गाने योग्य वेदवाणी में पारंगत होने के कारण वह उसी से सजी हुई चलती है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि कन्या को ब्रह्मचारिणी बनकर वेद विद्या पढ़नी होती थी। पूर्ण शिक्षा प्राप्त करके ही कन्या विवाह का विचार करती है।

स्तोमा आसन् प्रतिधयः कुरीरं छन्दः ओपशः।
सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत् पुरोगवः॥

- अथर्ववेद 14/1/8

पदार्थ- (**स्तोमाः**) स्तुति करने योग्य गुण (**सूर्यायाः**) प्रेरणा करने वाली या सूर्य की चमक के समान तेज वाली कन्या के (**प्रतिधयः**) वस्त्रों के अंचल (समान) (**आसन्**) हों। (**कुरीरम्**) कर्त्तव्य कर्म (**छन्दः**) आनन्दप्रद वेद (**ओपशः**) मुकुट (समान) हों और (**अग्निः**) अग्नि (शारीरिक एवं बाहरी अग्नि द्वारा स्वास्थ्य, शिल्प, यज्ञ आदि विधान) (**पुरोगवः**) अग्रगामी (पुरोहित समान) (**आसीत्**) हो। (जबकि) (**अश्विना**) विद्या को प्राप्त दोनों (वधू-वर) (**वरा**) परस्पर चाहने वाले हों।

भावार्थ- जब कन्या ब्रह्मचर्य से पूर्ण विद्या प्राप्त करके स्वास्थ्य आदि विधान में निपुण हो जावे और वैसा ही विद्वान् वर हो और जब दोनों एक-दूसरे को चाहने लगे तब परस्पर विवाह की कामना करें। विवाह से पूर्व दोनों एक-दूसरे की परीक्षा भी करके देख लें कि क्या उनका विवाह सफल होगा?

सोमो वधूयुः भवदश्विनास्तामुभा वरा।
सूर्यां यत् पत्ये शंसन्तीं मनसा सविताददात्॥

-अथर्ववेद 14/1/9

पदार्थ- (**सोमः**) शुभ गुणयुक्त ब्रह्मचारी (**वधूयुः**) वधू की कामना करने वाला (**अभवत्**) हो, (**उभा**) दोनों (**अश्विना**) विद्या को प्राप्त कर (वर-वधू) (वरा) परस्पर चाहने वाले (**आस्ताम्**) हों (**यत्**) जब (**पत्ये**) पति के लिए (**मनसा**) मन से (**संशन्तीम्**) गुण कीर्तन करती हुई (**सूर्याम्**) प्रेरणा करने वाली कन्या को (**सविता**) जगत् का उत्पत्ति करता परमात्मा (**अददात्**) देवें।

भावार्थ- ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणी पूर्ण विद्या प्राप्त करके परस्पर गुणों की परीक्षा करके अथवा कराके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करें। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि बड़े भाग्य से तुल्य गुण कर्म स्वभाव वाले स्त्री-पुरुषों का जोड़ा मिलता है।

पुंसि वै रेता भवति तत् स्त्रियामनुषिच्यते।
तद् वै पुत्रस्य वेदनं तत् प्रजापतिरब्रवीत॥

-अथर्ववेद 6/11/2

भावार्थ-युवा अवस्था में ही मनुष्य पूर्ण बलवान् और वीर्यवान् होकर उत्तम सन्तान उत्पन्न करे। यह ईश्वरीय नियम है।

तेन भूतेन हविषायमा प्यायतां पुनः।
जायां यामस्मा आवाक्षुस्तां रसनाभि वर्धताम्।

(शेष पृष्ठ 22 पर)

26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2025 तक

सात दिवसीय आश्रम स्थापना दिवस कार्यक्रम की सुन्दर झलकियां

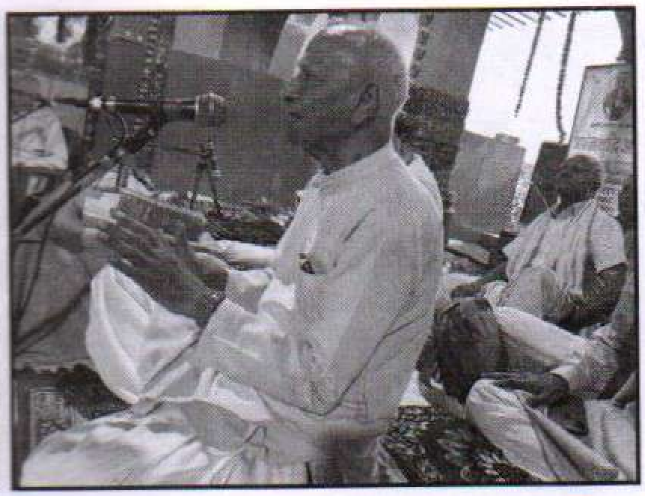

26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2025 तक

सात दिवसीय आश्रम स्थापना दिवस कार्यक्रम की सुन्दर झलकियां

26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2025 तक

सात दिवसीय आश्रम स्थापना दिवस कार्यक्रम की सुन्दर झलकियां

26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2025 तक

सात दिवसीय आश्रम स्थापना दिवस कार्यक्रम की सुन्दर झलकियां

26 सितम्बर से 2 अक्टूबर 2025 तक

सात दिवसीय आश्रम स्थापना दिवस कार्यक्रम की सुन्दर झलकियां

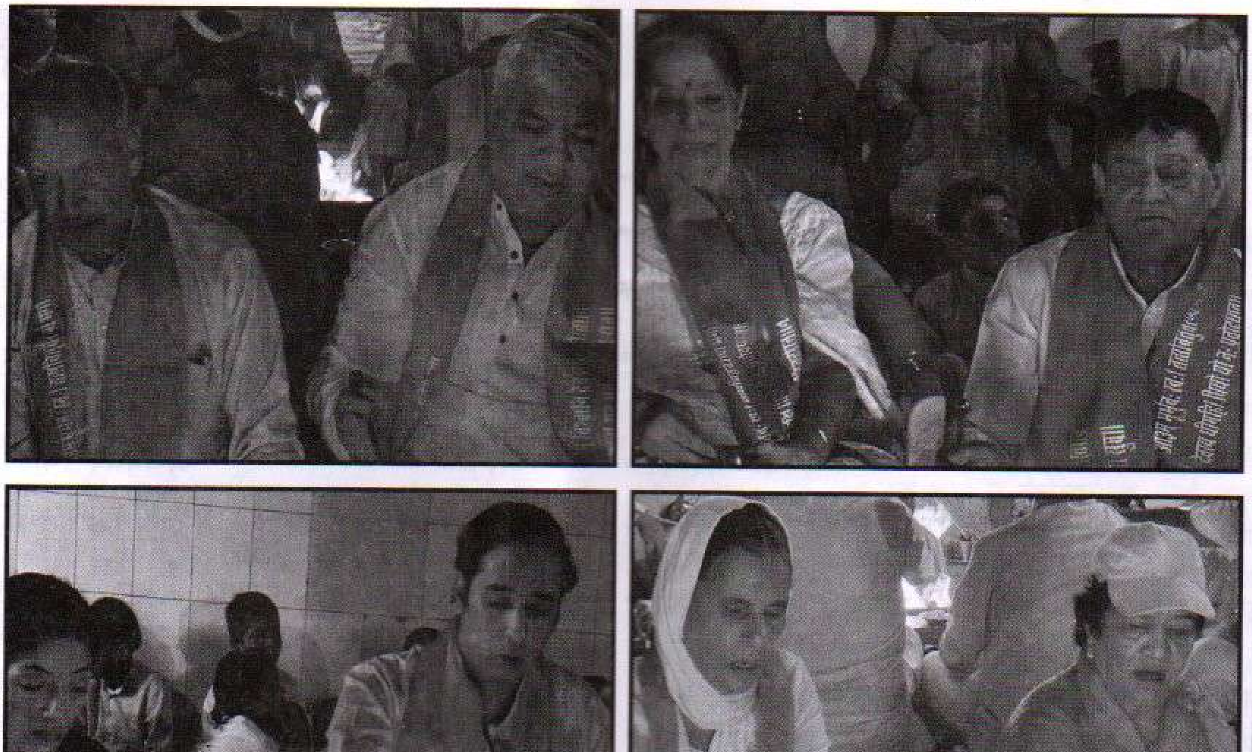

(पृष्ठ 16 का शेष)

– अथर्ववेद 6/78/1

पदार्थ-(**अयम्**) यह पुरुष (**तेन**) उस (प्रसिद्ध) (**भूतेन**) बहुत (**हविषा**) ग्राह्य अन्न के साथ (**आ**) सब ओर से (**पुनः**) अवश्य (**प्यायताम्**) बढ़ती करे। (**अस्मै**) इस पुरुष को (**याम् जायाम्**) जो वीरों को उत्पन्न करने वाली पत्नी (**आवाक्षुः**) इन लोगों से प्राप्त कराई है (**ताम अभि**) इस पत्नी के लिए यह (**पति**) पति (**रसेन**) अनुराग से (**वर्धताम्**) बढ़े।

भावार्थ- पुरुष सम्पूर्ण विद्या प्राप्त कर जब परिश्रम व योग्यता द्वारा पर्याप्त धन अर्जित कर ले तब माता-पिता, आचार्य आदि की अनुमति से स्त्री-पुरुष गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करे।

प्रतीची सोममसि प्रतीच्युत सूर्यम्।
प्रतीची विश्वान् देवान् तां त्वाच्छावदामसि॥

-अथर्ववेद 7/38/3

पदार्थ- हे वधू! (**प्रतीची**) निश्चित ज्ञानवती तू (**सोमम्**) चन्द्रमा को (**उत्**) और (**प्रतीची**) प्रतिज्ञापूर्वक मार्ग वाली तू (**सूर्यम्**) सूर्य को और (**प्रतीची**) प्रतिष्ठापूर्वक उपाय वाली तू (**विश्वान्**) सब (**देवान्**) उत्तम गुणों को (**असि असंसि**) प्राप्त होती है। (**ताम् त्वा**) उस तुझको (**अच्छावदामसि**) हम स्वागत करके बुलाते हैं।

भावार्थ- सब स्त्री-पुरुष चन्द्रमा समान शान्त, सूर्य समान तेजस्विनी और सर्वगुण वाली वधू का यथावत् आदर करें।

परन्तु वर को वधू पहले चुनती है।

येना निचक्र आसुरीन्द्र देवेभ्यस्परि।
तेना नि कुर्वे त्वामहंयथा तेऽसानि सुप्रिया॥

– अथर्ववेद 7/38/2

पदार्थ-(**येन**) जिस (**उपाय**) से (**आसुरी**) बुद्धिमानों या बलवानों का हित करने वाली बुद्धि से (**इद्रम्**) बड़े ऐश्वर्य वाले मनुष्य को (**देवेभ्यः**) उत्तम गुणों के लिए (**परि**) सब ओर से (**निचक्र**) नियत किया था। (**तेन**) उस उपाय से (**अहम्**) मैं (**त्वम्**) तुझको (**नि कुर्वे**) नियत करती हूँ (**यथा**) जिससे मैं (**ते**) तेरी (**सुप्रिया**) बड़ी प्रीति वाली (**असानि**) रहूँ।

अहं वदामि नेत् त्वं सभायामह त्वं वद।
ममेदसस्त्वं केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन॥

-अथर्ववेद 7/38/4

पदार्थ- (**अहम्**) मैं (**न इत्**) अभी (**वदामिह**) बोल रही हूँ (**त्वम् त्वम्**) तू-तू (**अह**) भी (**सभायाम्**) सभा में (**वद**) बोल। (**त्वम्**) तू (**केवलः**) केवल (**मम इत्**) मेरा ही (**अस**) होवे (**चन**) और (**न**) न (**अन्यासाम्**) दूसरी स्त्री का (**न कीर्तयाः**) तू ध्यान न करे।

भावार्थ- वर और वधू दोनों सभा में पंचों के सामने यह प्रतिज्ञा करें कि वे सदाचारी और धर्म पर आरूढ़ रहकर कभी भी व्यभिचार में लिप्त नहीं होंगे।

विवाह की विधि पिता ही करता है।

सूर्याया वहतुः प्रागात् सविता यमवासृजत्।
मघासु हन्यन्ते गावः फल्गुनीषु व्युह्यते॥

– अथर्ववेद 14/1/13

पदार्थ- (**सूर्याया**) सूर्य की चमक के समान तेज वाली कन्या का (**वहतुः**) दाय, दहेज (**प्र आगात्**) सम्मुख चले (**यम्**) जिस पदार्थ को (**सविता**) जन्मदाता पिता (**अव असृजत**) दान करे। (**मधासु**) सत्कार क्रियाओं में (**गावः**) वाचायें (**हन्यते**) चलें और वह वधू (**फल्गुनीषु**) सफल क्रियाओं के बीच (**उह्यते**) ले जाई जावे।

यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं
सूर्यायाः क्वैकं चक्रं वामासीत् कं देष्ट्राय तस्थथुः॥

अथर्ववेद 14/1/14

पदार्थ- हे स्त्री पुरुषो! (यत्) जब (सूर्यायाः) सूर्य की चमक के समान तेजस्विनी कन्या के विवाह को पूछते हुए तुम

आवश्यकता

गुरुकुल के छात्रों के लिए मुख्य आवश्यकता स्कूल पुस्तक की है जो भी भक्त जन इसमें सहयोग करना चाहते है कर सकते है, सहयोग करने के लिए सम्पर्क करें-

आचार्य अमृत आर्य
मो. 9990108323

मानव जीवन एवं परिवार का वास्तविक मूल्य

❑ आदित्य शिवहरे

प्रभुकृपा से आत्मोन्नति हेतु हमें बार-बार मानव शरीर रूपी यह अद्भुत यन्त्र मिलता है, इसके संचालन के लिए मन बुद्धि इंद्रियां सहित अनेक यंत्र भी मिलते हैं, जिनके सदुपयोग से हम आत्मिक उन्नति कर सके। स्व उन्नति के साथ-साथ यही शरीर मानव मात्र के कल्याण में भी उतना ही सक्षम है। प्रभु कृपा ही है कि इस संसार में प्रवास के दौरान इस प्रवासी (आत्मतत्व) को कम से कम परेशानी हो इसलिए परमपिता ने हमें पारिवारिक संस्था की व्यवस्था भी दी है, प्रत्येक आत्म-तत्व इसी संस्था में आश्रय पाता है, इसी की छाया में फलने-फूलने का पूर्ण अवसर मिलता है, इस संस्था में कार्यरत सारे पदाधिकारी बड़ी कुशलता से प्रवासी की सेवा में जुट जाते हैं। कोई इसके शारीरिक विकास का, कोई मानसिक विकास का कोई आर्थिक संसाधनों को जुटाता है, कैसे भी हो इस अतिथि को कहीं से कोई कमी न रह जाए। सभी पारिवारिक देवगण इसके लिए अपने निजी उद्देश्यों को भी एक अन्तराल के लिए भूल जाते हैं, कि वे भी तो किसी विशेष उद्देश्य के लिए ही आये थे। यह जानते हुए भी कि वे इसके असली माता-पिता, भाई-बहन, मित्र नहीं हैं वे तो केवल सहयोगी मात्र हैं। असली माता-पिता, भाई-बहन, मित्र नहीं हैं वे तो केवल सहयोगी मात्र हैं। असली माता-पिता, भाई-बहन, मित्र केवल परमात्मा ही है वे इसकी निःस्वार्थ सेवा करते रहते हैं। परिणामतः ही हम समाज में अनेकों अनेक महापुरुषों को इन परिवारों में बनते व संसार का कल्याण करते देखते हैं, इसलिए यह पारिवारिक संस्थाएं हमारी समाज की रीढ़ है, जिनके बिना किसी उन्नति समाज व उन्नत राष्ट्र की परिकल्पना नहीं हो सकती। परिवार हमेशा से अपने उद्देश्यों को स्मरण रखते हुए मानव कल्याण के लिए महामपुरुषों को जन्मते रहते हैं। इन बातों से हमारा तात्पर्य यह जताने का है कि यह पारिवारिक संस्थाएं एक प्रकार की वे धर्मशालाएं हैं जिनका उद्देश्य इन प्रवासियों को उनके धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उचित साधन प्रदान करना है और साथ ही साथ अपने अस्तित्व को भी बनाये रखना है।

वर्तमान समय में यह परिवार कहां खड़े है और क्या कर रहे हैं क्या इन्हें अपना उद्देश्य स्मरण है या भूल गए हैं जो परिवार सुख शांति और धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति में रत रहते थे आज वे पैसा छापने के कारखाने के अतिरिक्त कुछ नहीं रहे, उनमें जीवन जैसे खो सा गया है, आज उसी परिवार का प्रत्येक सदस्य एक दूसरे से यही अपेक्षा रखता है कि वह धन कमा कर लाए, बच्चे को शिक्षा केवल आर्थिक उन्नति के लिए ही दी जाती है, माँ-बाप, बेटे को अपने से अलग बाहर भेज देते हैं, परिणामतः वह स्वपत्नी के साथ एक नया परिवार बना लेता है जिसे हम एकल परिवार या न्यूक्लियर फैमिली कहते हैं, जिसकी जड़ में केवल अर्थ है और अर्थोत्पादन ही जिनका उद्देश्य। हुआ क्या कि अब देव बचे न देवत्व, जो अर्थ कभी परिवार का साधन था, वहीं परिवार अब अर्थ को समर्पित हो गया। धन के लिए परिवार, गाँव, समाज, देश छोड़ना ही हमारी भूल है, इनको साथ रख जो धन मिले उसी से सुख की आशा कर सकते हैं अन्यथा धन तो मिल सकता हैं पर वो सुख नहीं, हम यें भूल गए कि किस कार्य के लिए अर्थ जोड़ना था। मां-बाप बेटे को बताना भूलगए कि आपको किस लिए बड़ा किया गया है।

भगवान ने हमें कौड़ियाँ इकट्ठा करने के लिए यह शरीर नहीं दिया, परमपिता चाहता है पुत्र मैं तुम्हें मानव शरीर देता हूं, इसके सेवार्थ बुद्धि रूप एक सेवक भी देता हूँ और उसे सेवक को मन रूपी एक अपूर्व हथियार भी देता हूँ, और मन से चलाने वाली ये इन्द्रियाँ देता हूं और इन्द्रियों को कहां कब कैसे प्रयोग करना है इसके लिए गाइड के रूप में वेद रूपी ज्ञान भी देता हूं। जिनका समुचित उपयोग कर अपना और संसार का भला कर आनन्द से रहो। इतना सब मिलने के बाद हम क्या कर रहे हैं विचारने की बात यह है, क्या यह सब कौड़ियाँ बटोरने के लिए हैं या इन सबका उद्देश्य कुछ और है, आप सभी बुद्धिमान हैं तथा मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए परमपिता परमात्मा प्रदत्त वेद ज्ञान भी महर्षि दयानन्द सरस्वती की कृपा से उपलब्ध है। इसका विचार करें।

आयुर्वैदिक औषधि हरड़ के चमत्कारी लाभ

हरड़ भी दो प्रकार की होती हैं-बड़ी हरड़ और छोटी हरड़। हरड़ को हरीतकी नाम से भी जाना जाता है। हरड़ काले व पीले रंग में पाई जाती है। खाने में इसका स्वाद, खट्टा, मीठा होता है। हरड़ का पेड़ सीधा और तना हुआ होता है, इसके पत्ते हल्के पीले या सफेद रंग के होते है। इसमें कई प्रकार के पदार्थ पाए जाते हैं। ग्लाइकोसाइड्स जैसा पदार्थ हमारे शरीर को कब्ज से छुटकारा दिलवाने में मदद करता है। वर्षा ऋतु में हरड़ का सेवन सेंधा नमक के साथ करना चाहिए। हरड़ से बना चूर्ण और गोलियां बाजार से आसानी से उपलबध हो जाती है। आयुर्वेद के ऋषियों ने लिखा है जिसके घर में माता नहीं है उसकी माता हरीतकी है, कभी माता भी कुपित (गुस्सा) हो जाती है, परन्तु पेट में गई हुई हरड़ कुपित नहीं होती। आयुर्वेद के सबसे पुराने व प्रतिष्ठित ग्रंथ चरक संहिता में महर्षि पुनर्वसु आत्रेय जो औषधि लिखी है उसमें सबसे पहली औषधि हरितकी लिखी है। आचार्य भावमिश्र जी अपने भावप्रकाश का आरंभ हरीतकी से करते हैं।

ये सभी प्रयोग बार-बार आजमाए गए हैं कभी असफल नहीं होते। संस्कृत में हरीतकी, अभया, पथ्या, हिन्दी में हरड़, हर्र, बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी और तेलुगू में भी हरीतकी या हरड़। दवाई के लिए प्राय: बड़ी हरड़ का प्रयोग होता है। बाजार में बड़ी हरड़ के टुकड़े मिलते हैं वह न लें। साबुत हरड़ लें, जिसमें घुन न लगा हो। उसे तोड़कर बीज निकाल दें। फिर इसे बारीक पीस लें। जो स्वयं नहीं पीस सकते वह बाजार से हरीतकी चूर्ण बना बनवा लें।

बच्चों के लिए सबसे ज्यादा लाभकारी-छोटे बच्चों के लिए इसके समान घुट्टी नहीं है। चित्र में दिखाए अनुसार साबुत बड़ी हरड़ लें, उनमें से वह हरड़ चुनें जो पानी में डालने पर पानी में डूब जाए तैरे नहीं। इसे पत्थर पर चन्दन की तरह घिसकर दें-

1. बच्चे का पेट फुला हुआ हो रात को रोता हो, घिसी हुई हरड़ में गुड़ मिलाकर दें।
2. मुंह में छाले के कारण यदि बच्चा दूध ना पी पा रहा हो, घिसी हुई हरड़ में मिश्री मिलाकर दें।
3. बच्चे को भूख ना लगे, घिसी हुई हरड़ में सैंधा नमक मिलाकर दें।
4. दस्त में हरड़ व काली अतीस दोनों घिसकर मिलाकर दें।
5. जुखाम होने पर-सोंठ भी साथ में घिसकर मिलाकर दें।

विभिन्न रोगों में हरड़ के औषधीय उपचार-

- ❑ मुंह के छाले-छोटी हरड़ को पानी में घिसकर छालों पर 3 बार प्रतिदिन लगाने से मुंह के छाले नष्ट हो जाते हैं।
- ❑ छोटी हरड़ को बारीक पीसकर छालों पर लगाने से मुंह व जीभ के छाले मिट जाते हैं।
- ❑ छोटी हरड़ को रात को भोजन करने के बाद चूसने से छाले खत्म होते हैं।
- ❑ पिसी हुई हरड़ 1 चम्मच रोज रात को सोते समय गर्म दूध या गर्म पानी के साथ फंकी लें। इससे छालों में आराम मिलता है।

2. **गैस**- छोटी हरड़? एक-एक की मात्रा में दिन में 3 बार पूरी तरह से चूसने से पेट की गैस नष्ट हो जाती है।
- छोटी हरड़ को पानी में डालकर भिगो दें। रात खाना खाने के बाद चबाकर खाने से पेट साफ हो जाता और गैस कम हो जाती है।
- हरड़, निशोथ, जवाखार और पीलू को बराबर मात्रा में पीसकर चूर्ण बना लें। इसमें से आधा चूर्ण सुबह और शाम खाना खाने के बाद खाने से लाभ मिलता है।

3. **घाव**-हरड़ को जलाकर उसे पीसे और उसमें वैसलीन डालकर घाव पर लगायें। इससे लाभ पहुंचेगा।
- 3-5 हरड़ को खाकर ऊपर से गिलोय का काढ़ा पीने से घाव का दर्द व जलन दूर हो जाती है।

4. **एक्जिमा**- गौमूत्र में हरड़ को पीसकर तैयार लेप को रोजाना 2-3 बार लगाने से एक्जिमा का रोग ठीक हो जाता है।
5. **बच्चों के पेट रोग (उदर)**- हर हफ्ते हरड़ को घिसकर एक चौथाई चम्मच की मात्रा में शहद के साथ सेवन कराते रहने से बच्चों के पेट के सारे रोग दूर हो जाते हैं।
6. **बुद्धि के लिए**-भोजन के दौरान सुबह-शाम

आधा चम्मच की मात्रा में हरड़ का चूर्ण सेवन करते रहने से बुद्धि और शारीरिक बल में वृद्धि होती है।

7. **भूख बढ़ाने के लिए**-हरड़ के टुकड़ों को चबाकर खाने से भूख बढ़ती है।

8. **पतले दस्त**- कच्चे हरड़ के फलों को पीसकर बनाई चटनी एक चम्मच की मात्रा में 3 बार सेवन करने से पतले दस्त बंद हो जाएंगे।

9. **गर्मी के फोड़े, व्रण**- त्रिफला को लोहे की कढ़ाही में जलाकर उसकी राख शहद मिलाकर लगाना चाहिए।

10. **शनैमेह पर**-त्रिफला और गिलोय का काढ़ा पिलाना चाहिए।

11. **अण्डवृद्धि**- सुबह के समय छोटी हरड़ का चूर्ण गाय के मूत्र के साथ या एरण्ड के तेल में मिलाकर देना चाहिए या त्रिफला दूध के साथ देना चाहिए। त्रिफला के काढ़े में गोमूत्र मिलाकर पिलाना चाहिए।

12. **खांसी**-हरड़ और बहेड़े का चूर्ण शहद के साथ लेना चाहिए। हरड़, पीपल, सोंठ, चाक, पत्रक, सफेद जीरा, तन्तरीक तथा कालीमिर्च का चूर्ण बनाकर गुड़ में मिलाकर खाने से कफयुक्त खांसी ठीक हो जाती है।

13. **दर्द**-हरड़ का चूर्ण घी और गुड़ के साथ देना चाहिए।

14. आंख के रोग-त्रिफला का चूर्ण 7-8 ग्राम रात को पानी में डालकर रखें। सुबह उठकर थोड़ा मसलकर कपड़े से छान लें और छाने हुए पानी से आंखों को धोएं। इससे कुछ ही दिनों के बाद आंखों के सभी तरह के रोग ठीक हो जाएंगे। त्रिफला चूर्ण के साथ आधाा चम्मच हरड़ का चूर्ण घी के साथ लें। इससे नेत्रों के रोगों में लाभ मिलता है।

15. **पेशाब की जलन**- हरड़ के चूर्ण में शहद मिलाकर चाटकर खाने से, पेशाब करते समय होने वाला जलन और दर्द खत्म हो जाता है।

16. **गैस के कारण पेट में दर्द**- हरड़ का चूर्ण 3 ग्राम गुड़ के साथ खाने से गैस के कारण पेट का दर्द दूर हो जाता है।

17. **आन्त्रवृद्धि**- हरड़ों के बारीक चूर्ण में कालानमक, अजवायन और हींग मिलाकर 5 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम हल्के गर्म पानी के साथ खाने या इस चूर्ण का काढ़ा बनाकर पीने से आन्त्रवृद्धि की विकृति खत्म होती है।

हरड़, मुलहठी, सोंठ 1-1 ग्राम पाउडर रात को पानी के साथ खाने से लाभ होता है।

18. **आंख आना**- हरड़ को रात को पानी में डालकर रखें। सुबह उठकर उस पानी को कपड़े से छानकर आंखों को धोने से आंखों का लाल होना दूर होता है।

19. **श्वास या दमा रोग**-सोंठ और हरड़ के काढ़े को 1 या 2 ग्राम की मात्रा तक गर्म पानी के साथ लेने से श्वास रोग ठीक हो जाता है।

हरड़, बहेड़ा, आमला और छोटी पीपल चारों को बराबर मात्रा में लेकर उसका चूर्ण तैयार कर लेते हैं। इसे एक ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ मिलाकर चाटने से श्वासयुक्त खांसी खत्म हो जाती है।

हरड़ को कूटकर चिलम में भरकर पीने से श्वास का तीव्र रोग थम जाता है।

20. **मलेरिया का बुखार**- हरड़ का चूर्ण 10 ग्राम को 100 मिलीलीटर पानी में पकाकर काढ़ा बना लें। यह काढ़ा दिन में 3 बार पीने से मलेरिया में फायदा होता है।

21. **वात-पित्त का बुखार**-हरड़, बहेड़ा, आंवला, अडूसा, पटोल (परवल) के पत्ते, कुटकी, बच और गिलोय को मिलाकर पीसकर काढ़ा बना लें, जब काढ़ा ठण्डा हो जाये तब उसमें शहद डालकर रोगी को पिलाने से वात-पित्त का बुखार समाप्त होता है।

22. **भगन्दर**-खदिर, हरड़, बहेड़ा और आंवला का काढ़ा बनाकर इसमें भैंस का घी और वायविडंग का चूर्ण मिलकर कर पीने से किसी भी प्रकार का भगन्दर ठीक होता है।

हरड़, बहेड़ा, आंवला, शुद्ध भैंसा गूगल तथा वायविडंग इन सबका काढ़ा बनाकर पीने से तथा प्यास लगने पर खैर का रस मिला हुआ पानी पीने से भगन्दर नष्ट होता है।

सामाजिक क्रान्ति के लिए ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें। **-विक्रमदेव शास्त्री**

श्री धृतराष्ट्र को विदुर जी का उपदेश

❑ स्वामी वेदानन्द वेदवागीश

महाराज धृतराष्ट्र जब राजनीति की दलदल में अपने दुष्कर्मों के कारण फंस गए थे, तब उससे उद्धार पाने के लिए उन्होंने महाप्रज्ञ श्री विदुर जी को बुलाया और अपनी व्यथा सुनाकर कुछ उपदेश करने को कहा। तब विदुर जी ने इस प्रकार कहना आरम्भ किया- हे धृतराष्ट्र! युधिष्ठिर राज-लक्षणों से युक्त है। वह तीनों लोकों का स्वामी बनने में अपनी योग्यता रखता है, अब तक आपकी सेवा करता रहा है। ऐसे शुभ लक्षणों से सम्पन्न युधिष्ठिर को आपने निकाल दिया है। यह उचित नहीं किया। यद्यपि आप धर्मात्मा और धर्मवेत्ता भी समझे जाते हैं, परन्तु जहां तक राज्य के संभालने का प्रश्न है, आप राजगुणों से रहित हैं, आप नेत्र-हीन भी हैं। इसीलिए सबके अप्रिय बने हुए हैं। युधिष्ठिर में जो आप से अब दूर है, क्रूरता नहीं है। दयालुता से वह भरपूर है, धार्मिक है, सत्यवादी है, पराक्रमी है और आपमें पूज्य बुद्धि एवं गुरुभाव रखता है, फिर भी वह अपार कष्टों को झेल रहा है।

आपने दुर्योधन, सौबल, कर्ण और दु:शासन को राज्य का बोझ सौंपा और आप स्वयं इनकी अधीनता स्वीकार किए हुए हैं, फिर समझ नहीं आता, आप ऐश्वर्य की इच्छा कैसे कर रहे हैं। ऐसा किया जाना बुद्धिमत्ता से बहुत दूर है। जिन दुर्योधन आदि को आपने राज्य कार्यों में नियुक्त किया है, उनमें पाण्डित्य नहीं है, वे बुद्धिमान् नहीं हैं। मतिमान् की पहचान यह है कि वह शास्त्र के अनुसार अपना आत्मज्ञान रखता है। अपने सामर्थ्य को देखकर कार्यों का आरम्भ करता है। कठिन समस्याओं में सहनशीलता का परिचय देता है, धर्म के कार्यों में शिथिलता नहीं आने देता। अर्थ की ओर आकर्षित नहीं होता। सदा श्रेष्ठ कर्मों को करता है। निन्दित कृत्यों का परिवर्जन करता है। ईश्वर को मानता है। इस लोक और परलोक को स्वीकार करता है। अपने बड़ो, माता-पिता आचार्य, गुरु और विद्वानों में श्रद्धा रखता है। ऐसा जन-पण्डित, कुशल, बुद्धिमान् कहा जाता है।

जिस मानव में क्रोध की रेखा नहीं होती, विपत्ति और सम्पत्ति के प्रसंग उपस्थित होने पर जिसमें विषाद और प्रसाद के चिह्न प्रकट नहीं होते, उत्तम कार्यों के अनुष्ठान में जो लज्जा नहीं करता, ऐसा महामानव पण्डित के लक्षणों से युक्त होता है।

जिसके परामर्श वा कार्यों को दूसरे मनुष्य पहले नहीं जान पाते, किन्तु कर्म की सफलता पर ही पता लगता है, वही जन धीमान् है। जाड़ा, गरमी, भय, समृद्धि और असमृद्धि जिसके कार्यों में बाधा नहीं पहुंचाते एवं जो दूसरों द्वारा कथित बात को सुनकर शीघ्र समझ जाता है। अपने ज्ञान को परिपक्व करने के लिए व्याख्याताओं की व्याख्या को पर्याप्त सुनता है, काम के वशीभूत होकर अर्थ का सेवन नहीं करता, बिना पूछे अन्यों की बातों में हस्तक्षेप नहीं करना, ये सब लक्षण उत्तम पुरुष के माने गये हैं।

जो मेधावी होते हैं वे कभी न प्राप्त होने वाले वस्तु की चाह नहीं करते और किसी पदार्थ के विनाश होने पर शोक की अनुभूति नहीं करते, विपत्काल में विवेक को नहीं खोते वे ही कुशल माने गये हैं। अपनी शक्ति का सन्तुलन करके जो कार्य का आरम्भ करते हैं और आरम्भ किये कार्य को समाप्त करके ही अपनी सफलता जानते हैं, निष्प्रयोजन किसी कर्म को नहीं छेड़ते, सर्वथा एवं सर्वदा जितेन्द्रियता में रमण करते हैं, ऐसे महापुरुष पण्डित की उपाधि पाते हैं।

'हे भरतर्षभ! श्री विदुर जी आगे बोले-'बुद्धिमान् जन शिष्टों के कार्यों में स्नेह रखते हैं और सदा ही सुख सम्पदा की उपलब्धि के लिए चेष्टावान् रहते हैं। वे अपने हितसाधकों वा समाज कल्याण कारकों की निन्दा नहीं करते। अपने सम्मान में प्रसन्न एवं अपमान में दु:खी नहीं होते। वे सदा समुद्र के समान गम्भीर बने रहते हैं। क्षोभ को प्राप्त नहीं होते। वे किसी काल में भी कुण्ठित बुद्धि न होकर बिना-विचित्र कथाओं के प्रवचन में निष्णात एवं तार्किक और प्रतिभाशाली (तत्काल युक्ति-युक्त उत्तर देनेवाले) तथा शास्त्रों के मर्मज्ञ होते हैं। उनका श्रवणबुद्धि के अनुसार और बुद्धि शास्त्रानुगामी रहती है। वे शिष्ट मर्यादाओं का उल्लंघन कभी नहीं करते।

हे धृतराष्ट्र! इन सब पाण्डित्यपूर्णकृत्यों से विपरीत

आचरण करने वाले मूर्ख कोटी में गिने जाते हैं। ऐसे मूर्खों में वे लोग भी आते हैं जो शास्त्रों का अनुशीलन तो करते नहीं, किन्तु पण्डित होने का अभिमान रखते हैं। निर्धन होकर इच्छाएं बहुत करते हैं। निठल्ले-अकर्मण्य-आलसी होकर धन की कामना करते हैं। बुद्धिमान जन उसे अपण्डित (मूर्ख) बताते हैं।

जो व्यक्ति सकाम हुवे अपने काम को छोड़कर निष्कामी पुरुषों के समान दूसरों का कार्य करते हैं और मित्र के लिए सत्य को नहीं निभाते,-झूठा व्यवहार करते हैं। वे मूर्ख हैं। ऐसी ही अविद्वानों में उन नरों की भी गिनती है, जो कामों को व्यर्थ में ही फैलाए रखते हैं, और सभी जगह संशय करते है, शीघ्र हो सकने वाले कामों में भी विलम्ब करते रहते हैं। माता-पिता गुरु, आचार्य, ऋषि, मुनि, महात्मा सत्पुरुष और पूज्यजनों में श्रद्धा नहीं रखते एवं अच्छे स्वभाव वालों को मित्र नहीं बनाते, वे अपण्डित महामूर्ख हैं।

हे धृतराष्ट्र! ऐसे ही वे जन भी मूढ हैं, जो बिना बुलाए सभाओं में पहुंच ज़ाते हैं और बिना पूछे बहुत बोलते हैं, परस्पर के वार्तालापों में स्वयं ही हस्तक्षेप करते हैं एवं जिसको एक बार विश्वासघाती ठहरा लिया, उसमें भी फिर विश्वास कर बैठते हैं, ऐसे नीच मनुष्य मूर्ख हैं। स्वयं तो दोषों से भरे पड़े हैं और दूसरों के थोड़े विकारों को भी पर्वत के तुल्य प्रकट करते हैं। किसी प्रकार का सामर्थ्य न रखते हुवे भी क्रोध से आग बबूला हो जाते हैं, ऐसे नर-नारी मूढ़ता ही पराकाष्ठा पर हैं।

विदुर ही आगे बोले-'राजन्! वे लोग भी बुद्धिहीन हैं, जो अपने पराक्रम का मूल्यांकन न कर, धर्म और अर्थ से रहित न प्राप्त होने वाले पदार्थ को बिना काम किये ही प्राप्त करना चाहते हैं। शिक्षा न देने योग्यों को शिक्षा देते हैं एवं जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता ऐसे ही उपासना करते हैं और कायरों को गले लगाते हैं। इस प्रकार बुद्धिमान् और मूर्ख के लक्षण विदुर जी ने महाराज धृतराष्ट्र को बताए।

गायत्री महिमा धूप, अगरबत्ती एवं हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

विशिष्ट	40.00	रु. प्रति किलो
उतम	50.00	रु. प्रति किलो
विशेष	60.00	रु. प्रति किलो
डोलक्स	80.00	रु. प्रति किलो
स्वोंत्तम	140.00	रु. प्रति किलो
सुपर डीलक्स	320.00	रु. प्रति किलो

ओ३म ध्वज भाव इस प्रकार है

21/- ओ३म ध्वज (साइज 16X22)
42/- ओ३म ध्वज (साइज 22X34)
53/- ओ३म ध्वज (साइज 34X44)
42/- गायत्री मंत्र पटका

हवन कुंड भाव इस प्रकार है

450/- हवनकुंड 9'' स्टैड के साथ (आयरन)
560/- हवनकुंड 12'' स्टैड के साथ (आयरन)

लाजपतराय सामग्री स्टोर

हवन सामग्री धूप एवम् अगरबत्ती, कलावा, रौली, सिंदूर, ज्योत बत्ती, जनेऊ एवं ड्राई कोन धूप,
हवन कुण्ड, ओ३म ध्वज, ओ३म पटका, गुगल, लोबान, कपूर, व अर्टिफिशल फ्लावर इत्यादि

ऑफिस - 856, (ब्रांच ऑफिस : 3543), कुतुब रोड़, सदर बाजार, दिल्ली-110006

फैक्टरी - 195/3, नंगली, सकरावती, नजफगढ़, दिल्ली -110043

E-mail : gayatrimahima70@yahoo.com

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री राजपाल जी समाजसेवी, निठारी दिल्ली
2. श्री ठाकुर विक्रम सिंह जी, लाजपत नगर, दिल्ली
3. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
4. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
5. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
6. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
7. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
8. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
9. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
10. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
11. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
12. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
13. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
14. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
15. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21 अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियेरी भेरली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियेरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु. विदिशा, सु. श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री मास्टर सन्तलाल जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
59. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
60. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
61. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
62. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
63. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
64. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
65. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
66. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
67. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
68. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
69. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
70. श्री रवि कुमार जी आर्य, एच.एल सिटी, बहादुरगढ़
71. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
72. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
73. श्रीमती रीटा चड्डा, डी-204, हेरिटेज मैक्स, सैक्टर-102, गुरुग्राम, हरियाणा
74. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
75. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा
76. श्री मुकेश कुमार जी सुपुत्र श्री रघुवीर सिंह जी हरेवली, दि.
77. श्री मा. दलबीर सिंह जी आर्य, सैक्टर-2, बहादुरगढ़
78. श्रीमती कान्ता जी धर्मपत्नी श्री वेद प्रकाश जी शर्मा, सैक्टर-2, बहादुरगढ़

मंगला-मंगली चक्कर-यानि निर्दोषों पर दोषारोपण

❑ डॉ. गंगा शरण जी आर्य

आजकल अधिकांश लोग जन्मकुंडली के अंधविश्वास में पड़कर बेटे-बेटियों का गुण-कर्म-स्वभाव न मिलाकर कुंडली मिलाकर विवाह कर देते हैं जिसका परिणाम होता है आजीवन संघर्ष। कितनों का सम्बंध-विच्छेद हो जाता है, कितनों का वैवाहिक जीवन खंडित हो जाता है कितनों के घरों में प्रतिदिन देवासुर-संग्राम मचता है यह सब फलित ज्योतिष का दुष्परिणाम है। जरा तो विचार करके देखो कि यदि विवाह कुंडली का ठीक-ठीक मिलान करके करने पर शुभ होते है तो फिर अदालतों में तलाक के केस क्यों आते है? जिनके वे केस है यदि उनके विवाह कुण्डली के अनुसार गुण आदि मिलाकर हुए है तो फिर उनके जीवन में संघर्ष क्यों है? और जिनके विवाह मंगला-मंगली देखकर किए गए है वो बेटियाँ क्यों विधवा हो जाती है? मैंने इस पर शोध किया तो पता चला कि कुण्डली को बनाने वाले भी ब्राह्मण, कुण्डली को समझाने वाला भी ब्राह्मण, कुण्डली में दोष निकालने वाला भी ब्राह्मण और फिर उन दोषों का उपाय बताने वाला भी ब्राह्मण तो मैं ये कहना चाहता हूँ कि कम से कम ब्राह्मण अपनी बेटी की कुण्डली का तो सही मिलान करके ही विवाह करता होगा फिर उनकी बेटियाँ क्यों विधवा हो जाती है? उनका क्यों तलाक हो जाता है? आज तो स्वयं ब्राह्मण भी भ्रमित है कि ऐसा क्यों होता है? अरे! ये सिर्फ उनके वेदज्ञान से शून्य, पेटार्थी ब्राह्मणों (पूर्वजों) के द्वारा उनकी पीढ़ियों की कमाई के लिए किया गया प्रबन्ध है। और ब्राह्मणों का यह धंधा उनके ज्ञान पर नहीं बल्कि लोगों के अज्ञान पर टिका हुआ है। मंगला-मंगली का पाखंड भी ऐसा ही है। सुगम ज्योतिष पृष्ठ 638 के अनुसार जन्म के समय लड़का हो या लड़की हो, उस लग्न में यदि मंगल ग्रह-1,12,4,7,8 इनमें से किसी स्थान पर हो उस लड़के और लड़की को मांगलिक कहते हैं। मांगलिक लड़के और मांगलिक लड़की का आपस में विवाह होना शुभ माना जाता है। यदि मांगलिक लड़के का अमांगलिक कन्या से, अथवा मांगलिक कन्या का अमांगलिक लड़के से विवाह हो जाए तो पति-पत्नी का नाश करता है और पत्नी पति का नाश करती है। जब वर तथा कन्या दोनों के जन्म लग्न के समय 4, 10 स्थान पर राहु, केतु, शनि आदि पाप ग्रह हों और उनका विवाह हो जाए तो पति पत्नी दोनों एक दूसरे का नाश करते हैं। जिस पुरुष के जन्म लग्न के समय छठे स्थान में मंगल हो, सप्तम स्थान में राहु, अष्टम स्थान में शनि हो और पुरुष का विवाह हो जाए तो उसकी स्त्री जीवित नहीं रह सकती।

क्या मंगला-मंगली वास्तव में अमंगलकारी हैं?

मंगल का अर्थ है शुभ-कल्याणकारी। नौ ग्रहों में से सूर्य का मनुष्यों पर अधिक प्रभाव पड़ता है क्योंकि सूर्य का ताप और प्रकाश प्रत्यक्ष है वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य की किरणें मनुष्यों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है जब सूर्य किसी प्रकार भी मनुष्यों के लिए अमंगलकारी नहीं है जिसका प्रभाव भी प्रत्यक्ष है तो मंगल ग्रह जिसका प्रत्यक्ष कोई प्रभाव नहीं है और जिसका नाम भी मंगल है वह किसी मनुष्य के लिए अशुभ और अमंगलकारी कैसे हो सकता है? मंगल ग्रह भ्रमण करता हुआ चाहे किसी स्थान पर हो वह किसी मनुष्य को किसी प्रकार कष्ट नहीं दे सकता गर्मियों में गर्मी से जो कष्ट होता है वह मांगलिक और अमांगलिक दोनों प्रकार के मनुष्यों को समान रुप से होता है ईश्वर न्यायकारी है प्रत्येक मनुष्य को उसके अच्छे बुरे कर्मानुसार सुख-दुःख देता है। राहु, केतु की कोई दुःखात्मक सत्ता नहीं। सूर्य मंगल आदि ग्रह जड़ हैं, जड़ ग्रहों का मनुष्यों के दुःख-सुख, जन्म-मरण, विवाह आदि से कोई संबंध नहीं है। जैसा कि ऊपर बताया है मंगल का अर्थ है शुभकल्याणकारी। लड़की जब शुभ है कल्याणकारी है लड़का भी शुभ है कल्याणकारी है तब वह अशुभ कैसे हो गए? एक ही समय में एक ही देश में अनेक लड़के लड़की पैदा होते हैं क्या उन सबका जीवन एक जैसा होता है? उनके गुण एक जैसे होते है उनकी बुद्धि एक जैसी होती है? फिर यह भ्रम किसने पैदा कर दिया? मांगलिक होना केवल हमारा भ्रम ही तो है इसके अलावा और कुछ नहीं, अतः लड़के-लड़की जन्म लग्न के समय मंगल ग्रह किसी स्थान पर हो, इस से कोई भी लड़का-लड़की मांगलिक नहीं होते। जिनको मांगलिक का मिथ्या भय और संशय नहीं होता, वह चाहे किसी लड़की से विवाह कर ले, उनकी कुछ हानि नहीं होती, वह प्रेमपूर्वक सुख शान्ति से रहते हैं। मांगलिक लड़के-लड़की का आपस में विवाह शुभ कैसे हो सकता है? दोनों के मांगलिक होने से तो दो गुण अशुभ और अमंगल होना चाहिए। वास्तव में मांगलिक

होना केवल मात्र भ्रम के सिवा कुछ भी नहीं है। किसी भी सत्य शास्त्र में तथा गीता, रामायण में इसका वर्णन नहीं। जो लोग मांगलिक होना बिल्कुल नहीं मानते, उनके विवाह भी होते हैं। वह भी सुख शान्ति का जीवन व्यतीत करते हैं। यह मांगलिक आदि हर प्रकार की भ्रान्तियाँ हिन्दुओं में ही हैं, इसाई मुसलमान व विदेशों में क्यों नहीं? आजकल लड़के-लड़की घर से भागकर कोर्ट मैरिज कर लेते हैं ये तो मंगला-मंगली का विचार नहीं करते इनका अमंगल क्यों नहीं होता? ज्योतिषियों के पास इसका जवाब नहीं। प्राचीन काल में जब स्वयंवर विवाह होते थे, उस समय मंगला-मंगली कहाँ थे? जन्म कुंडली कहाँ थी? क्या सीता और राम की जन्मकुंडली मिलाई गई थी? क्या कृष्ण और रुक्मिणी की जन्मकुंडली मिलाई गई थी? क्या द्रौपदी, सावित्री, अनुसूइया की जन्मकुंडली मिलाई गई थी? क्या कालीदास और विद्योत्तमा की जन्मकुण्डली मिलाई गई थी? क्या हमारे बुजुर्गों अथवा दादा-परदादाओं ने मंगला-मंगली अथवा कुण्डली मिला कर विवाह किये थे? आदि-आदि। वास्तव में ये मंगला-मंगली का चक्कर कुछ नहीं हैं। ये केवल हमारे मन में बैठा दिया गया भ्रम है। विवाह में गुण, कर्म, स्वभाव मुख्य है। ग्रह नक्षत्रों का मेल नहीं।

इस मंगला-मंगली के दोषारोपण से कई निर्दोष लड़कों और लड़कियों को बहुत कुछ भुगतना पड़ता हैं, जैसे मंगली लड़के के लिए मंगली ही लड़की होनी चाहिए उन्हें मंगली लड़की न मिली तो देर तक अथवा बड़ी उम्र तक अविवाहित बने रहते हैं फिर कभी विवाह हुआ भी तो भागे भूत की चोटी उतारने की तरह ज्यों त्यों कुमारपन उतारना पड़ता है और अनुपयुक्त साथी से पल्ला बंध जाता है इसी प्रकार इस अड़ंगे में कितनी कन्याएं बहुत बड़ी हो जाती हैं। उनकी आयु के लड़के नहीं मिल पाते तब उस बेचारी की जिंदगी एक तरह से बर्बाद हो जाती है उपर्युक्त जोड़ी ढूंढने में यह मंगली होने की मान्यता कितनी भारी अड़चन उत्पन्न करती है इसके हमने कितने ही दुखान्त उदाहरण देखें हैं। इन घटनाओं का यदि वर्णन किया जाए तो सहृदय और विवेकशील व्यक्ति यही कहेगा कि जो इन व्यर्थ के भ्रम जंजालों से हिन्दू समाज को जितनी जल्दी छुड़ाया जाए उतना ही उत्तम है। पंडितों द्वारा फैलाई गई इस भ्रान्ति का एक दर्दनाक उदाहरण इस प्रकार है।

मेरठ के एक युवक ने अपनी नव विवाहिता स्त्री को चारपाई से बांधकर उस पर मिट्टी का तेल छिड़ककर आग लगा दी कहते हैं' कि मरने से पहले उस जली हुई स्त्री ने पास पहुंचने वालो को बताया कि उसके पति ने उसे जलाया है उसका विवाह एक वर्ष पूर्व ही हुआ था तब से उसका पति, वह युवक बीमार सा चला आ रहा था, ज्योतिषियों ने उससे कहा था कि तुम्हारी स्त्री 'मंगली' है उसी कारण से तुम बीमार रहते हो युवक ने बात पर विश्वास करके अपनी पत्नी को क्रूरता पूर्वक जिंदा जला डाला। ऐसी घटनाएं आए दिन अखबारों में छपती रहती हैं और जो नहीं छप पाती, उनकी संख्या भी कम नहीं है। इस प्रकार की घटनायें हमें सचेत करती हैं कि हमें पेटार्थी ब्राह्मणों द्वारा फैलाए इस फलित ज्योतिष रुपी विनाशकारी अंधविश्वास के गढ़ को शीघ्र-अतिशीघ्र ढ़ाना होगा अन्यथा कितना अनर्थ होगा जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। जन्म कुण्डली मिलाकर विवाह करने वालों को मैं एक बात बताना चाहता हूँ कि एक बार बनारस में भारत का सबसे बड़ा ज्योतिष सम्मेलन हुआ, वहाँ पर एक व्यक्ति 10 कुण्डलियाँ लेकर आया और उसने ज्योतिषियों के सामने कुछ प्रश्न रखे। वे प्रश्न इस प्रकार है:- इन 10 कुण्डलियों में से कौन-सी कुण्डली लड़के की है और कौन-सी लड़की की है? इन 10 कुण्डलियों के आधार पर व्यक्ति के जन्म का समय और स्थान क्या है? कुंडली के आधार पर कौन सिंधी, कौन पण्डित, कौन ठाकुर अथवा कौन किस जाति का है? इन 10 कुंडलियों में से कौन-कौन सा व्यक्ति जीवित अथवा मृत है? इन 10 कुंडली के आधार पर कौन सा व्यक्ति शादी-शुदा है और कौन-कौन सा कुँवारा है? उस महासम्मेलन में किसी भी ज्योतिषी के पास इन सवालों का जवाब नहीं था। मैं सबसे निवेदन करता हूँ कि आप भी पुत्र या पुत्री के विवाह से पूर्व यदि कुंडली मिलवाते है तो कृप्या उपरोक्त प्रश्नों में से केवल निम्नलिखित तीन प्रश्न ही पूछ लिया करें कि ये कुंडली लड़के की है या लड़की की? जिसकी ये कुंडली है ये विवाहित है या अविवाहित? और यह जीवित है या मृत? अंत में पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि मंगला-मंगली के कुचक्र में न पड़कर गुण, कर्म, स्वभाव एवं स्वास्थ्य के आधार पर विवाह आदि करें। दूसरों से स्पष्ट कहना चाहिए कि हम तो मंगला-मंगली में विश्वास नहीं करते क्योंकि यह सब मान्यता वेद विरूद्ध है अर्थात् ऋषि मुनियों की प्रणाली में नहीं है।

-गांव शाहबाद मोहम्मदपुर, दिल्ली

धर्म पर बलिदान होने वाले आर्यवीर हकीकत राय

❑ श्री कन्हैया लाल जी आर्य, गुरुग्राम

हमारे पूर्वजों का स्मरण सदा प्रेरणा का आखण्ड स्रोत रहा है। उनकी जीवनियों का अध्ययन हमारे लिए सदा ही शिक्षाप्रद, मार्गदर्शक सिद्ध हुआ है। न केवल भारत, अपितु विश्व की समस्त मानव जाति के लिए हमारी यह सांस्कृतिक धरोहर एक आकर्षण का विषय रही है। मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीरों में वीर हकीकत राय एक ऐसा बालक था, जिसने धर्म पर अचल रहकर अपनी निडरता, साहसीपन प्रदर्शित करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिखा दिया कि आर्यवीर कभी भी अपने प्राणों का मोह नहीं करता, बल्कि अपने धर्म की रक्षा के लिए प्रसन्नता से अपना जीवन को होम कर दिया करते हैं।

बलिदान ही मनुष्य को महान् बनाता है। जिस देश में वीर हकीकत राय जैसे धर्म पर बलिदान होने वाले वीरों ने जन्म लिया है, वह देश महान् बन जाता है। किसी कवि ने हमारे देश की महानता पर ठीक ही कहा है-

यूनान, मिश्र, रोमां सब मिट गये जहां से,
कुछ बात है कि हस्ती (अस्तित्व) मिटती नहीं हमारी।

धर्मनिष्ठ व्यक्ति अपने शरीर को तो आहुत कर सकता है, परन्तु अपनी आत्मा को लज्जित नहीं किया करता। वह अपने सिद्धान्तों पर अडिग रहता है। आज तक अनेक धर्मवीरों ने अपने धर्म और मातृभूमि पर अपने प्राणों की आहुति दी है, परन्तु वीर हकीकत राय एक ऐसा बालक था, जिसने बहुत ही अल्प आयु में धर्म की रक्षा करते हुए, अडिग रह कर हंसते-हंसते अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

पश्चिमी पंजाब के प्रसिद्ध नगर सियालकोट की धरती को यह गौरव प्राप्त है कि यहाँ के एक क्षत्रिय कुल में इस वीर बलिदानी ने पिता श्री भागमल एवं माँ श्रीमती कौरां देवी जी के घर जन्म लिया। श्री भागमल जी एक व्यापारी एवं समृद्ध व्यक्ति थे। अत: अपने पुत्र का पालन-पोषण लाड-प्यार से किया। माता-पिता ने अपने पुत्र को दृढ़ धार्मिक संस्कार प्रदान किये। विदेशी प्रभाव के कारण वेद, दर्शन, उपनिषद् का स्वाध्याय छूट चुका था, परन्तु गीता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। यही कारण है कि बलिदान से पूर्व हकीकत राय के लाहौर के शासक के समक्ष जो कहा है उससे सिद्ध होता है कि वीर हकीकत राय के परिवार में गीता का अध्ययन होता था। मानों वह गीता के इन शब्दों को दुहरा रहा हो-

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूत:॥

यह आत्मा अमर है, इसे शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकती, पानी इसे गला नहीं सकता, वायु इसे सुखा नहीं सकती। शरीर को केवल नष्ट किया जा सकता है, आत्मा को नहीं। आत्मा तो अमर है। यह शरीर का उसी प्रकार परिवर्तन है, जिस प्रकार मनुष्य अपने पुराने वस्त्र को त्याग कर नया वस्त्र धारण कर लेता है-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि
गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यानि
संयाति नवानि देही॥

हकीकत राय ने कहा था, ''अपने धर्म को त्याग कर पाये जीवन से मृत्यु, सहस्त्रगुणा श्रेष्ठ है। मैं अपने प्राण दे दूंगा, परन्तु अन्याय के सामने नहीं झुकूंगा।''

जब हकीकत राय का जन्म हुआ उस समयदेश पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उस समय की राजभाषा फारसी थी। पिता श्री भागमल जी ने अपने एकमात्र पुत्र हकीकत को फारसी सीखने के उद्देश्य से मौलवी के पास मदरसे में भेजा, जिसमें पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे मुसलमान थे। बाल हकीकत तीव्र बुद्धि वाला था। उसकी तीव्र बुद्धि और लगन को देखकर मदरसे के अन्य सहपाठी जो मन्दबुद्धि थे, ईर्ष्या करते थे। हकीकत की तीव्र बुद्धि उस के लिए विपदा बन गई। हकीकत राय के बलिदान का मुख्य कारण जहाँ मुसलमानों की परम्परागत असहिष्णुता तथा धर्मान्धता थी, वहाँ एक कारण हकीकत के सहपाठियों का उसके प्रति ईर्ष्या एवं द्वेषभाव भी था।

शीघ्र ही हकीकत राय ने फारसी भाषा पर अच्छा अधिकार कर लिया। मौलवी जी उसकी योग्यता से इतने प्रभावित थे कि वह यदा-कदा जब भी मदरसे से बाहर जाते, जब हकीकत को ही इन बच्चों को सौंप

जाते। मौलवी जी की अनुपस्थिति में बच्चे खेलने लग गये। उन मुसलमान बच्चों ने अपनी पढ़ाई में व्यस्त हकीकत को भी खेलने के लिए विवश किया, परन्तु हकीकत नहीं माना। मौलवी जी का अत्याधिक कृपा पात्र होने के कारण मुसलमान बच्चे पहले से ही चिढ़े हुए थे, परन्तु अब उन्हें तंग करने का एक अवसर और मिल गया। उसी समय हकीकत के साथी रशीद ने कहा, "तुमने मौलवी साहब से मेरी चुगली क्यों की?" अन्य साथी अनवर ने कहा, "मेरे जुआ खेलने की शिकायत तुमने क्यों की?" हकीकत ने कहा, "मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" इससे वे दोनों और चिढ़ गये और कहने लगे, "हम चोरी करें या जुआ खेलें, तुम्हारे बाप का क्या जाता है?" हकीकत ने कोई उत्तर नहीं दिया और हकीकत को पीटने लगे। इस बीच मौलवी जी वहाँ आ गये। उन्होंने रशीद और अनवर को डांटा और हकीकत को भी घर जाने के लिए कह दिया।

उन दिनों हकीकत राय के विवाह की बात चल रही थी। मुसलमानों के दुश्चरित्र के कारण हिन्दू लोगों में बाल विवाह की कुप्रथा चल गई थी। उस समय हकीकत राय की आयु 13 वर्ष थी। इस समय बटाला के श्री किशन सिंह (कुछ लोग श्री चेतराम भी कहते हैं) की सुपुत्री लक्ष्मी का विवाह हकीकत राय के साथ कर दिया गया।

हकीकत राय जब घर लौटा तो पिता ने उसके फटे-कपड़े और शरीर के घावों को देखा और इनका कारण पूछा। हकीकत ने सच-सच बता दिया। दूसरे दिन भागमल मदरसे में पहुँचे और उन्होंने मौलवी से शिकायत की। मौलवी जी ने रशीद और अनवर को डांटा परन्तु इस डांट-फटकार को विपरीत प्रभाव पड़ा और उन्होंने हकीकत से बदला लेने की योजना बना ली। एक दिन मदरसे से वापिस आते समय फिर खेलने के लिए विवश किया परन्तु हकीकत ने खेलने से मना कर दिया। बार-बार विवश करने पर हकीकत ने कहा-रशीद भाई, माँ भवानी की सौगन्ध! आज मेरा खेलने का मन नहीं है। दूसरा साथी अनवर बोला-अबे भवानी के बच्चे। एक पत्थर के टुकड़े को तू माँ कहता है। मैं तुम्हारी इस पत्थर की देवी को सड़क पर फैंक दूंगा जहाँ रास्ता चलते लोग लातों और पैरों से तुम्हारी माँ भवानी की पूजा करेंगे। शान्त चित्त हकीकत राय बोला-यदि यही बात मैं तुम्हारी पूजा बीबी फातिमा (जो मुहम्मद साहब की पहली पत्नी की कन्या थी) के लिए भी कह दूँ, तो तुम्हें कैसा लगेगा? यह सुनते ही रशीद और अनवर आग बबूला हो गये और मौलवी जी को शिकायत की कि हकीकत राय ने हमारी फातिमा बीबी को गाली दी है। मौलवी ने हकीकत को समझाते हुए कहा, "हकीकत! क्यों मृत्यु को बुलावा दे रहे हो? इन लोगों से क्षमा मांग लो।" हकीकत ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "मैंने कोई अपराध ही नहीं किया तो क्षमा क्यों मांगू?" रशीद बोला- "लड़को, इसे बांध कर काजी साहब के पास ले चलो, वही इस काफिर (हिन्दू) को दण्डित करेंगे।

मुसलमान लड़के हकीकत राय को काजी के पास ले गये। सभी मुसलमान लड़कों ने एक स्वर से हकीकत की शिकायत करते हुए कहा-काजी जी, इस काफिर (हिन्दू) ने हमारी रसूलजादी को गाली दी है। बिना किसी जाँच पड़ताल के काजी बौखला गया। काजी बोला-शैतान की औलाद! तेरी यह हिम्मत कि तू रसलूजादी को गाली दे। हमारे एक इशारे पर तुम्हारी गर्दन घड़ से अलग हो सकती है।

हकीकत के पिता श्री भागमल जी भी वहाँ पहुंच गए। उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "काज़ी साहब। मेरे हकीकत ने ऐसा कोई अपराध नहीं किया है। इन लड़कों ने जानबूझ कर झूठ बोल कर इसे फंसाया है। कृपया करके आप इसे छोड़ दें।" हकीकत राय पिता के इस प्रकार गिड़गिड़ाने के कारण एक दम बोला, "पिता जी! आपने बचपन से ही मुझे धर्म का पाठ पढ़ाया है और आप इनके आगे हाथ जोड़कर क्यों गिड़गिड़ा रहे हैं। मैंने जब कोई अपराध किया ही नहीं, फिर आप किस बात की क्षमा मांग रहे हैं?"

काजी ने व्यवस्था (फतवा) देते हुए कहा-"भागमल जी। इस गुस्ताख लड़के की जान बचाने का एक ही मार्ग है। इसे इस्लाम कबूल करना होगा। हकीकत के पिता श्री भागमल ने पुत्र को समझाते हुए कहा, 'बेटा! हाँ कर दो। इस्लाम स्वीकार करने में क्या आपत्ति है, कम से कम जान तो बचेगी।" हकीकत राय शेर की तरह गरज कर बोला, "पिता जी! मुझे आश्चर्य हो रहा है कि आप मोह, ममता में इतने नीचे उतर सकते हो, मैं कभी भी इस्लाम स्वीकार नहीं करूंगा-मुझे अपना धर्म प्राणों से भी प्रिय

है।'' काजी ने बड़े क्रोध से कहा, ''भागमल। मैं तेरे बेटे को मौत की सजा सुनाता हूँ। लाहौर का हाकिम भी मेरे इस निर्णय को बदल नहीं सकता।''

हकीकत का पिता श्री भागमल, पत्नी कौरां जी को लेकर लाहौर के लिए प्रस्थान कर गये। हकीकत की पत्नी श्रीमती लक्ष्मी जी ने जब अपने पति को रसियों में बंधा देखा तो विचलित हो गई। हकीकत राय ने कहा, ''लक्ष्मी! शायद, हमारी यह अन्तिम मुलाकात होगी, क्योंकि मैं जानता हूँ यह धर्मान्ध मुसलमान मेरे साथ न्याय नहीं करेंगे। मैं अपना धर्म त्याग कर प्राण नहीं बचाना चाहता।''

मुकदमा लाहौर के हाकिम के पास पहुँचा। काजी बार-बार हकीकत के लिए मृत्यु दण्ड देने का आग्रह कर रहा था। अन्ततः लाहौर के हाकिम को भी मृत्यु दण्ड सुनाना पड़ा। सुनते ही हकीकत की माता चीख मारकर हकीकत से चिपट गई और फूट-फूट कर रोने लगी। हकीकत ने माँ को धीरज बंधाते हुए, माँ, आपने सदैव मुझे धर्म का पाठ पढ़ाया है जिसमें लिखा है कि आत्मा अमर है और शरीर नाशवान् है। मैं अपने संकल्प पर दृढ़ हूँ। मैं भक्त प्रहलाद तथा सत्यवादी राजा हरीश चन्द्र का वंशज हूँ। मुझे गर्व है कि आज आप का पुत्र धर्म की बलिवेदी पर बलिदान हो रहा है, परन्तु स्मरण रखना कि मेरी मृत्यु के पश्चात् ऐसा तूफान आयेगा कि जिससे इनको अपने झूठे निर्णय पर पश्चाताप होगा।'' लाहौर के हाकिम ने कहा, ''तुम्हारी बकवास बहुत सुन चुके हैं, तुम्हें अन्तिम अवसर दिया जाता है, इस्लाम कबूल कर लो और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करो।'' हकीकत ने उत्तर दिया, ''मैं प्राण दे दूंगा परन्तु किसी अन्यायी के अन्याय के आगे झुकूंगा नहीं।'' एक कवि ने हकीकत के इस उत्तर पर अपनी भावनाएं इस प्रकार व्यक्त की हैं-

डराता मौत से है क्या, अमर है आत्मा मेरी।
नहीं कुछ कारगर होने की,
इस पर तेग (तलवार) यह तेरी॥
धर्म पर मर मिटूँगा मैं,
धर्म ही मुझको प्यारा है।
यही हमदर्द है मेरा, यही मेरा सहारा है॥

हकीकत राय की बातें सुनकर लाहोर का हाकिम और वह काजी आग बबूला हो गये और उन्होंने जल्लाद को आदेश देते हुए कहा-ऐ जल्लाद। इस काफिर (हिन्दू) की गर्दन तत्काल धड़ से अलग कर दो, जिससे किसी काफ़िर को फिर इस्लाम का अपमान करने का साहस न हो। जल्लाद हकीकत का हाथ पकड़ कर ले तो गया परन्तु इसकी अल्पायु एवं भोले भाले चेहरे को देखकर उस के हाथ से तलवार गिर पड़ी। हकीकत ने तलवार उठाकर जल्लाद को देते हुए कहा, ''इसमें आप का कोई दोष नहीं, आप अपने कर्तव्य को पूर्ण करो।'' जल्लाद ने आंखे बन्दर कर तलवार के एक ही वार से हकीकत का सिर धड़ से अलग कर दिया और वह धर्मवीर सदा-सदा के लिए अमर हो गया।

वीर हकीकत राय ने देश, धर्म की रक्षा व जातीय स्वाभिमान के लिए अपना बलिदान देकर भारतीय इतिहास को एक नया मोड़ दे दिया। हकीकत राय ने अपने बलिदान द्वारा स्वधर्म-प्रेम का एक अनूठा उदाहरण विश्व के सामने रखा।

इतिहास केसरी प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने इस वीर को श्रद्धांजलि देते हुए निम्न पंक्तियों की रचना की-

धन्य-धन्य हो बाल हकीकत, धन्य-धन्य बलिदानी।
देगी जन जीवन जन-जन को, तेरी अमर कहानी॥
प्राण लुटायें निर्भय होकर, धर्म प्रेम की ज्वाला फूंकी।
तुझे प्रलोभन देकर हारे, सकल क्रूर मुल्ला अज्ञानी॥
मृत्यु का आलिंगन कीन्हा, जीवन भेद बताया।
मौत से डर कर अन्यायियों की, एक न तूने मानी।
धन्य तुम्हारे माता-पिता और सती लक्ष्मी नारी।
प्राणवीर तुम प्रण के पक्के, धन्य देश अभिमानी।

आओ इस धर्मवीर को स्मरण करके वीर हकीकत राय के पद चिन्हों पर चलने का व्रत लें। युग को बदलने का संकल्प लें। एक भारत के आर्यवंशीय बच्चो! क्या तुम इस प्रकार धर्म से प्यार करोगे? यदि ऐसा हुआ तो वह दिन दूर नहीं जब पूरे विश्व में **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्''** का स्वप्न साकार होगा।

आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। - विक्रम देव आर्य

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

श्री मा. इन्द्रजीत जी म.न. 886, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	20000/-
श्री पंकज जी पाराशर बहादुरगढ़ (छात्रवृत्ति)	12000/-
श्रीमती स्नेहलता जी गुप्ता, अशोक विहार दिल्ली	5000/-
श्री रविन्द्र कुमार जी चड्डा सैक्टर-102, गुरुग्राम	3000/-
श्री मा. करतार सिंह जी आर्य टीकरी कलां दिल्ली	2100/-
श्री सन्दीप जी विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	2100/-
सन साइन अपैक्स स्कूल टीकरी कलां, दिल्ली	1500/-
श्री सिद्धार्थ कुमार जी चड्डा सैक्टर-102, गुरुग्राम	1200/-
श्री सूर्य प्रकाश जी आर्य झज्जर	1100/-
श्री राजेश जी चहल, एच.एल. सिटी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री तुषार जी गुलिया काठमण्डी, बहादुरगढ़	1100/-
श्री विजय लक्ष्मी जी मदान पश्चिम विहार दिल्ली	1100/-
श्री कृष्ण कुमार जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री मनन निरवाल जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री गोविन्द जी आर्य पटेल नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री राजेश जी अरोड़ा, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री तिलक राज जी गुलाटी संत कॉलोनी बहादुरगढ़	1000/-
श्री सन्जू जी गांव परनाला, बहादुरगढ़	1000/-
श्री रणवीर सिंह जी वैदिक वृद्धाश्रमा बहादुरगढ़ (छात्रवृत्ति)	1000/-
श्री सतीश जी वर्मा, ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	1000/-
श्री रमण जी नरूला, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1000/-
श्री रामकुमार जोवल लाईनपार बहादुरगढ़	551/-
श्री शारदा मेडिकल स्टोर बालोर मोड़, बहादुरगढ़	510/-
श्री देवेन्द्र सिंह जी टीकरी कलां दिल्ली	500/-
श्री लवीश एवं कु. मानवी विवेकानन्द, बहादुरगढ़	500/-
श्री स्वामी रामानन्द जी वैदिक वृद्धाश्रम, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती सुषमा जी शर्मा, बहादुरगढ़	500/-

गौशाला हेतु दान

श्री मनन निवाल जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्रीमती सन्तोष जी वैदिक वृद्धाश्रमा बहादुरगढ़	1000/-
श्रीमती स्व. केशरवती जी बवाना दिल्ली	500/-
श्रीमती अंगूरी देवी जी छिल्लर, बहादुरगढ़	500/-

विविध वस्तुएं

1. श्रीमती सन्तरा जी सैनीपूरा, बहादुरगढ़, तीन चार क्विंटल गेहूं
2. श्री हरीश जी कुमार सन्त कॉलानी, बहादुरगढ़ 50 किलो चावल एवं 3 किलो दाल
3. श्रीमती कु. वंशीका जी एक कट्टा चावल
4. श्री सत्यनारायण जी माण्डौठी एक कट्टा चावल
5. श्रीमती विद्यावती जी दुआ, बहादुरगढ़ गायों के लिए एक कट्टा छिल्का, एक कट्टा मिक्चर, एक कट्टा सोयाबीन चूरी, एक पेटी गुड़
6. श्री सागर जी राठी बच्चों को ब्रैड पकोडा दिए अपने पुत्र प्राप्ति पर
7. श्री सन्दीप जी बच्चों के लिए प्रसाद
8. श्री आशीष जी मलिक अपने जन्मदिवस के अवसर पर फ्रूटी एवं चाकलेट
9. श्री योगेश जी 11 किलो दाल दिए
10. श्री जगदीश जी अपनी स्व. माता निर्मला कुमारी जी की पुण्य तिथि पर केले एवं सेव
11. श्री विश्वनाथ जी गृहप्रवेश करने की खुशी में बच्चों के लिए फल एवं मिठाई।
12. श्री दीपक जी एवं श्री नरेश जी बच्चों के लिए एक कैरेट केले एवं मिठाई।
13. श्री हेमन्त जी सभी बच्चों के लिए एक-एक मिठाई का डब्बा।
14. श्रीमती दीपाली जी बच्चों के लिए पिज्जा
15. श्री निशान्त जी बच्चों के लिए पकोड़े, लड्डू एवं केले आदि
16. श्री विश्वनाथ जी बच्चों के लिए 5 किलो इमरती।
17. श्री आनन्द जी सुपुत्र श्री सूर्यप्रकाश जी 20 किलो चावल।
18. श्री साकेत जी 10 किलो चावल एवं बच्चों के लिए दीपावली का सामान
19. श्री मनीष जी शर्मा अपने जन्मदिवस के अवसर पर जलजीरा, केले, बिस्किट्स, कुरकुरे
20. श्री कुसुम जी महेश्वरी सभी बच्चों के लिए सन्तरे।
21. गुप्तदान 10 किलो आटा, 5 किलो दाल, 5 किलो चने, 5 किलो चावल, 5 किलो चीनी
22. गुप्त दान 5 किलो सेव
23. श्री प्रवीण जी बच्चों के लिए कैरेट केले।
24. श्री दीपक जी डाबास शनि मन्दिर टीकरी कलां दिल्ली 1 टीन सरसों का तेल।
25. श्रुति जी पौत्री श्री सूर्य प्रकाश जी आर्य 60 पीस साबुन

एक समय का विशेष भोजन

1. श्री सत् साहेब परिवार के तरफ से एक समय का विशेष भोजन
2. श्री सत् साहेब आश्रम लाईनपार में एक समय का भोजन
3. श्री राकेश जैन जी अपने आवास पर एक समय का भोजन
4. श्रीमती आशा जी एक समय का विशेष भोजन एवं एक वॉटर कूलर आश्रम में प्रदान किया।
5. श्रीमान राज कुमार जी आश्रम में एक समय का विशेष भोजन कराया।
6. श्री सन्दीप जी शर्मा अपने पुत्र के जन्म दिवस के अवसर पर एक समय का भोजन।
7. अमन एवं श्री ओमप्रकाश जी के जन्म दिवस
8. श्रीमान मनोज जी राणा महिये के प्रति सप्ताह के सोवार को एक बार के भोजन में खीर खिलाई।
9. श्रीमान राज जी अपने पिता की पुण्य तिथि पर एक समय का विशेष भोजन

मुद्रक व प्रकाशक : आचार्य विक्रमदेव, सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 नवम्बर 2025 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

परमहंस परिव्राजकाचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की पुण्य स्मृति में एवं

आर्य समाज स्थापना के सार्द्ध (150वां) शताब्दी समारोह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न

पुस्तक का विमोचन करते परोपकारिणी सभा अजमेर के अधिकारीगण

उपस्थित जनसमूह

महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित **आर्य समाज स्थापना के सार्द्ध (150वां) शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में 10 से 12 अक्टूबर तक महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर के तत्वावधान में तीन दिवसीय 142वां भव्य ऋषि मेला पुष्कर रोड स्थित ऋषि उद्यान में आयोजित हुआ।** इस आयोजन के विशेष आकर्षण **अथर्ववेद पारायण यज्ञ** 6 अक्टूबर 2025 को प्रारम्भ, 12 अक्टूबर 2025 को पूर्णाहुति, **वानप्रस्थ दीक्षा-ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रदर्शन, वेद कण्ठस्थीकरण की परीक्षा, ऋषि दयानन्द के जीवन पर विशेष गोष्ठियां, नाटिकायें, आर्य साहित्य एवं यज्ञादि उपकरणों का विक्रय, कार्यकर्त्ताओं तथा विद्वानों का सम्मान।** -कन्हैया लाल आर्य **(विस्तृत समाचार समाचार खण्ड में प्रकाशित)**

सात दिवसीय आश्रम स्थापना दिवस कार्यक्रम की सुन्दर झलकियां

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

आत्म-शुद्धि-पथ मासिक

नवम्बर 2025
छपी पुस्तक - पत्रिका
एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

बुक पोस्ट भार- 60 ग्राम

सेवा में-
ार्य सन्देश साप्ताहिक
ी आर्य प्रतिनिधि
ान रोड़ नई दिल्
1...01

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। अपने प्रियों के नाम पर कमरा बनवाने के इच्छुक सम्पर्क कर सकते है। आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। धन्यवाद!

—व्यवस्थापक आश्रम सम्पर्क सूत्र: 7988671343

प्रिय बन्धुओं! मास नवम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी दिसम्बर अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा भेजें अथवा सम्पर्क करके खाता नम्बर लेकर सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

- व्यवस्थापक

NEW DELHI